* ओ३म् *

अगद तंत्र (विष चिकित्सा)

(प्रथम भाग)

रचयिता

क० वि० वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य

प्रथम वार]

[मूल्य ।=)

"अमृत प्रैस," अमृतधारा लाहौर में छपा ॥

श्री पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य की बनाई हुई अन्य वैद्यक पुस्तकें ॥

प्लेग प्रतिबन्धक—ताऊन के विषय में वैद्यों, हकीमों व डाक्टरों ने आज तक जितना अनुसन्धान किया है, सब इस में अंकित है, स्वास्थ्य रक्षा के प्रत्येक नियम और प्रत्येक औषधि का सविस्तर वर्णन है, इसको पढ़कर किसी अन्य पुस्तक के देखने की आवश्यकता नहीं रहती मूल्य ॥=), उर्दू ।≡)॥, उर्दू ।=)॥

प्रसूतकाल—यह पुस्तक प्रत्येक घर में मौजूद होनी चाहिये, और प्रत्येक घर में पढ़ कर या सुनाकर इसके सम्पूर्ण लेख हृदयस्थ करा देने चाहियें। प्रत्येक दाया को इस से अवगत होना आवयश्क है। इसमें २३ तत्सम्बन्धी चित्र हैं। मूल्य ॥=)

ब्रह्मी—आजकल ब्रह्मी के तन्द्रानाशक, मस्तिष्क पौष्टिक, स्मरण शक्ति वर्द्धक, प्रमेह नाशक आदि होने को सभी जानने लग गये हैं, और ब्रह्मी बहुत सेवन की जा रही है। इसमें ब्रह्मी का पूरा वर्णन करके सेवन करने के असंख्य उपाय लिखे गये हैं, मूल्य ↗)

स्वास्थ्य रक्षा विषयक दश नियमों का वर्णन—यह एक अंग्रेज़ी पुस्तक का अनुवाद है, जिस में ग्रन्थकार ने दस आवश्यक सरल और प्रत्येक के पालन योग्य नियम नियत किए हैं, जिनके पालन से स्वास्थ्य प्राप्त होता है, और बुढ़ापे में भी जवानी का आनन्द आ सकता है। मूल्य ।॥)

ऋतुचर्य्या—हमारे देश में ६ ऋतु होती हैं, बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर ऋतु, इनका सविस्तर वर्णन, इन ऋतुओं का मनुष्यों पर प्रभाव, और इनके अनुसार रहन, सहन, खाने पीने, पहिनने, और गृहस्थ के नियम ऐसी उत्तमता से वर्णन किए हैं, कि प्रत्येक मनुष्य भली भान्ति लाभ उठा सकता है, प्रत्येक ऋतु में होने वाले रोगों का वर्णन, वा इलाज भी साथ २ दिया है, इसके

(आगे देखो अन्त में)

अगद् तंत्र

(विष चिकित्सा)

प्रथम भाग

प्रिय पाठकगण !

कई वर्ष व्यतीत हुए, जब मैंने वैद्यक विषयों पर पूर्ण तथा सरल लघु पुस्तकें लिखने का विचार किया था। यह विचार केवल वैद्यों को लाभ पहुंचाने को नहीं था, प्रत्युत सर्वसाधारण के लिए भी लाभ पहुंचाने के लिये था। इसी सिलसिले में पहिली पुस्तक "शीघ्रपतन" मुद्रित हुई। तत्पश्चात् बारह और पुस्तकें इस समय तक आप सज्जनों की भेंट कर चुका हूं, जब से आप सज्जनों ने इन पुस्तकों का समादर किया है तब से ही मेरी साहसवृद्धि हो रही है। मुझे इस बात से पूरी प्रसन्नता है कि आप सज्जनों की कुछ सेवा जिसके मैं योग्य हूं, या जो मैं जानता हूं कर रहा हूं। आज यह चतुर्दश लघुपुस्तक " विष-चिकित्सा " प्रारम्भ करता हूं। विष संसार में इतने हैं कि सब का वर्णन तो क्या, नाम भी मिलना कठिन है, तथापि प्रयत्न किया गया है कि जितने विष ज्ञात हुए हैं उन सब का वर्णन किया जावे, वैद्यों और हकीमों को तो प्रत्येक बात जानना आवश्यक है, अतः विषों का वर्णन और चिकित्सा, जैसा कुछ इस पुस्तक में मिलेगा, उसको देख करके प्रसन्न होंगे। परन्तु सर्वसाधारण को भी इस वैद्यक विभाग से अवश्य सुज्ञ रहना चाहिए। कोई नहीं कह सकता कि कोई विष किसी समय शरीर में प्रविष्ट हो जावे या खाया जावे और वह विष कैसा भयानक हो॥ यदि उस समय हकीमों और डाक्टरों को ढूढने बैठें तो सम्भव है कि विष अपना इतना

असर करे जब कि वैद्य या हकीम का आना व्यर्थ हो—यह पुस्तक प्रत्येक गृह में उपस्थित रहनी चाहिए। यदि सर्वसाधारण उसे स्मृतिगत न करेंगे तो कम से कम आवश्यकता पर तो काम आवेगी। सम्भव है जीवन पर्यन्त एक बार भी इसकी आवश्यकता न पड़े, और परमात्मा करे ऐसा ही हो; परन्तु यह भी सम्भव है, कि यदि परमात्मा न करे एक समय भी कोई काम पड़ गया तो उस समय पर अमृत का काम देगी ॥

संसार में इतने भिन्न २ प्रकार के विष हैं कि एक लघुपुस्तक में सबका वर्णन आना कठिन है। अतः हमने अगद तंत्र का कई विभागों में भेंट करने का विचार किया है। उसी में यह प्रथम भाग है जिसमें नाना वर्ग का वर्णन करेंगे। अगद् तंत्र दूसरा भाग उर्दू में छप चुका है, यथासमय हिन्दी में भी निकल जावेगा है ॥

जहां कंटक हैं वहां पुष्प भी हैं, जहां विष है उसके साथ उस की चिकित्सा भी है। हमको एक बूटी का स्मरण आ गया जिसका नाम अज्ञात है, एक प्याले में कितनी भी अफयून रखकर उसका रस उस पर निचोड़ दें तो वह भस्म समान हो जाती है, पाव भर अहिफेन एक व्यक्ति खा लेवे और ऊपर से उसको खा लेवे तो कदापि असर नहीं होगा। एक समय एक साधु का कथन सुना, कि पाव भर संखिया यदि उसको देदो तो उसको खाकर ऊपर से एक बूटी खा लेता था, और उसका कुछ असर न होता था। हमें विश्वास है कि ऐसे ही सम्पूर्ण विषों की चिकित्सा है ॥

जहां विष है वहां उसका अगद अर्थात् विषघ्न पदार्थ भी उपस्थित है, परन्तु हम नहीं जानते हैं, मानुषी ज्ञान ने अपने अनुभवों और अन्वेषणों से यद्यपि प्रत्येक विष का कुछ न कुछ उपाय सोच लिया है, परन्तु प्रत्येक विष का वास्तविक अगद जो ईश्वरीय सत्ता ने उत्पन्न किया है वह कोई २ ज्ञात हुआ है, परमात्मा करे प्रत्येक विष की

तात्कालिक विष नाशक औषधियों का ज्ञान होता चला जावे, सम्प्रति जैसे कार्य चलता है हमको चलाना है। मैं इस पुस्तक में प्रायः सर्व ज्ञात हुये उपचारों को लिखता जाया करूंगा। मैं आशा करता हूं कि यह पुस्तक माला ऐसी होगी कि अद्यावधि नहीं लिखी गई है॥

मैं हूं

आप लोगों का शुभचिन्तक

ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य

अगद तंत्र (विष चिकित्सा)
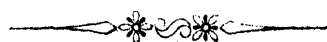
अनुक्रम से वर्णन करने के प्रथम मुझे कुछ वार्ताविशेष निवेदन करनी हैं। सर्व विषों के उपायों के सम्बन्ध में सम्मिलित सूचना और इस विषय पर आवश्यक बातें और सर्वसाधारण के ज्ञान के अर्थ आवश्यक टिप्पणी, यह सब प्रथम लिख कर पश्चात् एक २ विष का वर्णन और उसका उपचार विधि पूर्वक करूंगा। क्योंकि मेरा स्वभाव ही है कि जिस विषय पर कोई पुस्तक लिखूं, एक या दूसरी पुस्तक को पकड़ कर लेखानुलेख नहीं कर दिया करता। प्रत्युत जब किसी विषय पर पुस्तक लिखनी हो तो वैद्यक, डाक्टरी, युनानी सर्व पुस्तकें जो यथासम्भव मिल सकें देखता हूं। बहुत समय पर्यन्त उन पर लगातार सोचता रहता हूं। और कुछ आनुभविक बातें संग्रह करता रहता हूं। तब उस पुस्तक को पूरी लिखता हूं। अतः यद्यपि इस किताब का भी साइज़ बढ़ जावेगा। परन्तु इस विषय पर किसी अन्य पुस्तक को देखने की आवश्यकता नहीं रहेगी। और समझ कर कहता हूं कि इस पुस्तक के मुद्रण से प्रथम ऐसी पुस्तक कहीं से नहीं मिल सकती है। यह पुस्तक हकीमों, वैद्यों, डाक्टरों सब को अपने समीप रखनी चाहिये, चिकित्सा के वास्ते काम देगी, यदि कोई विषमारित लाश (मृत शरीर) भी उनके पास लाई जावे तो उनका कर्त्तव्य है कि देख कर बतावें कि मृत्यु का क्या कारण है। सर्वसाधारण को इस वास्ते सदा समीप रखनी चाहिये कि यद्यपि उनको मृत शरीर को चीर कर विषमारित का वृतान्त ज्ञात करने की आवश्यकता नहीं, परन्तु विषमारित रोगी की परीक्षा, उसका प्रयत्न प्रति समय आवश्यक है। कौन जानता है कि किस समय आवश्यकता पड़ जावे॥

पूर्व पुरुषों ने पूर्णतया अन्वेषण किया है—जानना चाहिए कि

पूर्वजों ने सर्व विषों के सम्बन्ध में बहुत सा अन्वेषण किया था। वैद्यक की पुस्तकें सुश्रुत आदि में शतशः ऐसे जीवों और कीड़ों इत्यादि के नाम मिलते हैं कि जिनके अर्थ भी समझ में नहीं आते; स्यात् उन दिनों विशेष वन, जंगल होने के कारण विशेष विषधारी कृमि हों, या यह कि उनके नाम ऐसे बदल गए हों कि अब हमें पता नहीं लगता है, जितना पता लगता है उनका वर्णन वहां बहुत ही अच्छा लिखा गया है। इसी प्रकार यूनानी की प्राचीन पुस्तकों में कतिपय ऐसे नाम पाए जाते हैं कि जिनके अर्थ हम अपने शब्दों में नहीं समझ सकते हैं, परन्तु यह पता अवश्य लगता है कि उन पुरुषों ने पूर्णतया अन्वेषण किया था॥

डाक्टर नूतन विष बना रहे हैं—डाक्टरी पुस्तकों में भी अगणित ऐसे विष हैं कि जिनका वर्णन वैद्यक और यूनानी में नहीं है। परन्तु ये विष कृत्रिम हैं, स्वाभाविक नहीं। वैद्यक और यूनानी ने केवल स्वाभाविक विषों का वर्णन किया है, यथा कोकेन घोर विष है, तम्बाकू का टैनन घोर विष है, कुचला का सत चावल भर मार सकता है, कारबोलिक एसिड और इसी प्रकार के और तेजाब हलाहल विष से कम नहीं हैं। ये सर्व विष डाक्टरी प्रणाली और पदार्थों से बने हुए हैं, हम उनका वर्णन अवश्य करेंगे। डाक्टर लोग ऐसे विषों से बड़े २ काम लेते हैं॥

विष रसायन होते हैं—स्मरण रहे कि विष अधिक मात्रा में मृत्यु का कारण होता है, परन्तु उचित मात्रा में सचमुच अमृत का काम देता है। संखिया अधिक मात्रा से मार देता है परन्तु उचित मात्रा से इस की भस्म, वृद्ध को युवा बना देती है। सर्प का विष मनुष्य को मार भी देता है, परन्तु उचित मात्रा में एक ही मात्रा से नपुंसक को पुरुषत्व प्राप्त होता है। और विषों की चिकित्सा भी है। प्रयोजन यह है कि कोई भी विष ऐसा नहीं है कि जिसमें शतशः बढ कर गुण न हों। इन बातों को तो सब जानते ही हैं परन्तु

आप सुनकर चकित होंगे कि मधुमक्षिकायें यदि आमवात (गठिया बाय) वाले को काटें तो स्वस्थ हो जावे। एक व्यक्ति के घुटने पर अत्यन्त पीड़ा थी, वहां पर सहस्रपाद (कनखजूरा) चिमट गया और वह तत्काल राजी हो गया। हमारा विचार तो था कि प्रत्येक विष का जहां वर्णन करें वहां उसके गुण और उचित मात्रा आदि का भी वर्णन करते जावें, परन्तु इस लघु पुस्तक की मुटाई अधिक हो जाने का भय है। अतः हम इस भाग को किसी पृथक् पुस्तक के अर्थ रखते हैं। और यहां विष को केवल विष ही की अवस्था में वर्णन करेंगे। वत्सनाभ (बछनाग) भारी विष है, इसके गुण "देशोपकारक" में हमने वर्णन किए थे तो कई मास लगे थे॥

विष क्या है ?—जो पदार्थ खाने पीने या सूंघने, घाव में लगने या शरीर में छूने या काटने या डंक लगाने इत्यादि से हानि विशेष पहुंचावे या मारक चिन्ह प्रगट करे, उसे विष कहते हैं। इस परिभाषा की दृष्टि से एक साधारण पदार्थ भी और औषधि भी मात्रा से अधिक खाई जावे तो हानि पहुंचाने के कारण उसको विष कह सकते हैं, परन्तु विष का शब्द उन्हीं पदार्थों पर बर्ता जाता है जिनकी स्वल्प मात्रा ही बहुत हानि पहुंचाती है और आधिक्य मृत्यु का कारण होता है। जो पदार्थ पेट भर खाने से एक मनुष्य को मार देवे वह विष नहीं कहला सकता है। हां वह पदार्थ जो साधारण हैं, और साधारणतया विष उनको नहीं कहा जाता, परन्तु मात्रा में अधिक खाने से विषत्व उत्पन्न करते हैं, उनका वर्णन भी हम अन्त में करेंगे। विष को अंग्रेजी में पाइज़न (Poison) युनानी में सम्म और हिन्दी में ज़हर कहते हैं॥

फादजहर॥

यह युनानी शब्द बाज़ज़हर का अपभ्रंश है, विष को दूर करने वाला और प्राणरक्षक पदार्थ बाज़जहर कहलाता है इसी को अगद कहना चाहिये॥

फादजहर का युनानी वर्णन ॥

जो पदार्थ जिस पदार्थ का विष दूर करे उसको उसका "अगद" या 'फादजहर' कहते हैं। उसे अंग्रेजी में 'Antidote' (अन्टीडोट) पुकारा जाता है। यथाहि, मारफिया का अगाद या एन्टीडोट, परमेंगेनेट आफ पोटाशियम है, या बच्छनाग का अगद निरविषी है। जिस विष का जो विषघ्न है वही उसका फादजहर है, परन्तु युनानी में फादजहर खास औषधि का नाम भी है। यथाहि जहां लिखा हो फादजहर मादनी (खानिज) तो प्रयोजन 'जहरमोहरा' से होता है। फादजहर उस पदार्थ के साथ आता है जिसमें यह गुण हो कि विष को दूर करे, प्रकृति को सहायता दे, विष चाहे सरद हो या गरम स्वभावत: उसको लाभ पहुंचाने वाला हो। जहर मोहरा खताई, जहरमोहरा हैवानी, जुदवार खताई, नारयलदरयाई पपीता इत्यादि युनानी फादजहर हैं। फादजहर तीन प्रकार का होता है, फादजहर हैवानी (पाशविक दर्पनाशक पदार्थ) फादजहर मादनी (खानिज दर्पनाशक पदार्थ) फादजहर नबाती (वानस्पत्य दर्पनाशक पदार्थ) ॥

जहर मोहरा हैवानी—कई प्रकार का होता है। एक बन्दर के पित्ता या आन्त से निकालते हैं। चीन और हिन्दुस्तान के महाराजा उसको अपने खजाने में रखा करते थे, जो पत्थर की आकृति का होता है। दूसरा प्रकार वह है जो जंगली पशुओं चूहा, हिरण इत्यादि से निकालते हैं। एक को हजरुलतीस कहते हैं और यह शीराज़ से आता है। एक बारहसिंहा से निकलता है उसको 'हजरुल अमल' कहते हैं। और कहते हैं कि कोई व्यक्ति तीन रोज तक तीन रत्ती की मात्रा को घिस कर प्रति दिन पीवे तो आयु पर्य्यन्त कोई विष असर नहीं करेगा ॥

अफसोस! कि यह सब प्रकार के विष आधुनिक समय में नहीं

प्राप्त होते हैं। राजाओं का ऐसे पदार्थ संग्रह करना काम था, सो उन बेचारों को यह बात कभी सूझती भी नहीं हैं। खैर ऐसे पुरुष भी हैं जो यत्न से कुछ न कुछ अन्वषेण करते रहते हैं। एक प्रकार यह है कि उसे 'हजरुलहय्या' या मुहरामार कहते हैं। और पार्थविक जन्तुओं के काटने पर प्रयुक्त होता है और एक प्रकार वह है कि 'मारखोर' बकरे के पेट से निकलता है, और सर्प के डंक पर लगाने से सब विष को चूस लेता है और प्रायः सपेरों (सर्प वालें) से मिलता है, हमारे पास एक टुकड़ा है ॥

फादजहर हैवानी, को वर्षों पर्य्यन्त राजा लोग खाया करते थे। उनकी प्रशंसा अपार है, इन से कई योग बनते हैं। यथा निम्न लिखित योग प्राणरक्षक हैं शरीर को सर्व विषों से शुद्ध करता है। शरीर की शक्ति और उत्तेजना को बढ़ाता है और आजायरईसा अर्थात् दिल दिमाग और जिगर का शक्ति वर्द्धक है ॥

युनानी योग—फादजहर हैवानी ६ रत्ती, अनविद्ध मोती ३ रत्ती, याकूत सुर्ख ३ रत्ती, लाल बदखशानी ३ रत्ती, संगयशब ३ रत्ती, मोमियाई ३ रत्ती, अम्बरअशहब ३ रत्ती, केशर ईरानी ३ रत्ती, स्वर्ण पत्र २ रत्ती, खालिस कस्तूरी १ रत्ती प्रथम कठोर पदार्थों को सीमाक पत्थर के खरल में खरल करें, पश्चात् शेष पदार्थ प्रविष्ट करके मिश्री की चाशनी बना कर सब पदार्थों को डाल कर तीन विभाग करें, और प्रति दिन एक भाग खावें और ऊपर से प्याला उष्ण दुग्ध का पीवे, और थोड़ा चलें, और थोड़ी देर के पश्चात् मिश्री के शर्बत में गुलाब का अर्क मिला कर पीवे और आराम से रहें, जब तक पूर्ण क्षुधा न लगे भोजन न करे और जब पूरी क्षुधा हो तो हल्का और अच्छा भोजन करे ॥

फादजहर मादनी—यह पत्थर खानों से निकलता है। दहली (इन्द्रप्रस्थ) दुर्ग में एक हौज (जलाशम) था और उसमें पानी

भरा रहता था, उसमें फादजहर मादनी लगा हुआ था, जिस किसी को शहर में कोई विषधारी जन्तु काटता, उसका पानी लेजाकर पिला देते, आराम आजाता था। सुना जाता है कि अब उसे उखाड़ २ कर अंग्रेज लेगए हैं। फादजहर मादनी मशहूर आजकल **जहरमोहरा खताई ही है।** फादजहर मादनी श्वेत, पीत, हरित इत्यादि ५ प्रकार का होता है। असली जहरमोहरा खताई वही है कि हल्दी को प्रथम पत्थर पर घर्षण करें, तत्पश्चात् उसे घिसें, यदि रंगत लाल हो जावे तो अच्छा है। यह भी लिखा है कि निम्ब के पत्ते मुंह में डालने से जो कड़वापन मुख में होजाता है, वह इसके डालने से जाता रहे और जिसका धूप में पसीना निकले वह सब से बढ़िया है। यह थोड़ा सा सर्प के मुख में डालें उसी समय मार देवे। असली की मात्रा एक रत्ती, परन्तु बाजारों में जो बहुतायत से मिलता है वह तो तोला२ भी खाया जाता है, विशेष अच्छा भी ३ माशा तक। यह सब विषों को दूर करता है। इसका खाना स्वास्थ्यरक्षक है, और महामारियों के दिनों में बीमारियों के बुरे असर से सुरक्षित रखता है, इत्यादि २—।

फ़ादजहर नबाती—नारजेल दरयाई, निरबसी, पपीता इत्यादि हैं। खूबकला, गुले दाग़स्तानी इत्यादि भी फादजहर हैं, इनका वर्णन हमारी पुस्तक "प्लेग के प्रतिबंधक उपाय" में लिखा है। इच्छा हो तो वहां से देख लेवें॥

जहर की किस्में—यूनानी में विष तीन प्रकार के होते हैं। जहर हैवानी जैसे सर्प, चूहा, बिच्छू। जहर नबाती, जैसे अफ़यून, धतूरा, बच्छनाग। जहर जमादी जैसे संखिया, सिन्दूर। जो विष संयोग से स्वयं तैयार किया गया हो, उसको जहर मुरकब्बा कहते हैं॥

वैद्यक में विष को केवल दो भागों में विभक्त किया है, स्थावर, (बेजान) और जंगम (जानदार)। डाक्टरी में विष की यों तो बहुत किस्में हो सकती हैं, परन्तु उन्होंने इस प्रकार से विभाग नहीं किया

है, उनका विभाग उनके गुणों के सम्बन्ध से है, यथा साधारणतया निम्नलिखित विभाग किए जाते हैं। प्रथम Irritant (इरिटैन्ट) वह विष जिन से वमन और दस्त बहुत हो जावें, जैसे—नीला थोथा ॥

द्वितीय 'नारकॉटैन्ट' (Narcotant) जिससे दिमाग या दिल के कार्य में अन्तर आजावे और शरीर में शैथिल्यादि होकर संज्ञानाशादि हो यथा कोकेन ॥

तृतीय 'नारकोटेको अरीकोटन्ट' (Narcotico Irritant) जिसमें उपरोक्त दोनों बातें हों ॥

डाक्टरी के विष बहुत से सत इत्यादि उनके अपने बनाए हुए हैं, उनका वर्णन भी यथाशक्ति हम करेंगे ॥

सुश्रुत से साधारण वर्णन—अब हम वैद्यक के सुप्रसिद्ध परम माननयि सुश्रुत ग्रन्थ से विषों के वर्णन के सम्बन्ध में जो कुछ उस में पृथक् २ वर्णन करने से प्रथम संक्षेप से कतिपय आवश्यक बातें और साधारण नियम लिखे हैं, उन्हें लिखे देते हैं। हम सब बातों का उल्लेख नहीं करेंगे केवल कुछ आवश्यक बातों का ही अनुलेखन करते जायंगे। सुश्रुत में जहां से विषों का वर्णन आरम्भ किया है वहां सब से प्रथम इस बात का वर्णन है कि लोग प्रायः राजा को विष देदिया करते हैं, उसे बच कर रहना चाहिए, और किसी का विश्वास नहीं करना चाहिए। अत्यन्त ही योग्य वैद्य रखना चाहिए। जो भोज्य पदार्थों का निरीक्षण करे। पाकशाला अच्छे स्थान पर बनानी चाहिए। बर्तन शुद्ध और स्वच्छ रखने चाहिए, यहां तक कि पाकशाला के समीप कोई तिनका भी दृष्टि गोचर न हो, इत्यादि बहुत शिक्षायें पाकशाला, पाचक जन, सेवक इत्यादि के सम्बन्ध में लिखी हैं। पुनः लिखा है कि जो मनुष्य विष देता है उसकी क्या परीक्षा है ? (यह तो पुलीस का काम है) हम इ को भी त्यागकर आगे चलते हैं ॥

विष किस प्रकार मिलाया जाता है—भोजन में, पानी

में, स्नान के पानी में, दातुन के द्वारा, कंघी से लगा कर, उबटन में मिला कर, छिड़कने के पदार्थों में, चन्दनादि लगाने के पदार्थों में, माला, कपड़े, मंचान, बिस्तरे, आभूषण, खड़ाऊं, आसन, घोड़े व हाथी की पीठ, अतर, नस्य, हुक्का, चिलम आदि और सुर्मा आदि के द्वारा अत्यन्त हानिकारक विष भीतर शरीर में पहुंचाए जाते हैं, जो कि राजा की मृत्यु के कारण होते हैं ॥

विषयुक्त भोजन की परीक्षा—जो भोजन राजा को परोसा जावे उस को प्रथम श्वान, काक, मक्खी, चींटी के आगे फेंकना चाहिए। यदि विषयुक्त होगा तो च्योंटी या ऐसे छोटे जन्तु तो तत्काल मर जावेंगे, और बड़े बेहोश हो जावेंगे, पुनः थोड़ा सा खाना उसमें से लेकर आग में डालना चाहिएं, यदि विषयुक्त होगा तो अग्नि चिटचिट करने लगेगी, या उसमें नीली ज्वाला निकलेगी, या अग्नि के टुकड़े २ हो जाते हैं। धूम्र बहुत तेज होता है और जल्दी नहीं बुझता है ॥

विषयुक्त भोजन परीक्षण के समय स्मरणीय वार्ता—विषयुक्त भोजन की परीक्षा प्रायः जानवरों से ही होती है, अतः प्रथम उनको खिलाकर पश्चात् राजा को देना चाहिए। चकोर यदि विष युक्त खाने को खावे, या कदाचित देखने ही से उसके नेत्र विकृत हो जाते हैं, कोयल का स्वरमाधुर्य्य तत्काल नष्ट हो जाता है, बक उन्मत्त हो जाता है, मोर अचेतना युक्त नृत्य करने लगता है, और भ्रमर गूंजने लगता है, चितकबरा हिरण रोने लगता है, तोता मैना पुकारने लगता है, हंस बहुत बोलने लगता है, बन्दर को दस्त लग जाते हैं। पस ऐसे जानवर राजा की पाकशाला के समीप रहने चाहिये। यही कारण है कि घरों में तोता, मैना, चकवा, बन्दर आदि रखने की प्रथा चली आती है, यद्यपि लोक इनके प्रयोजन से अनभिज्ञ हैं ॥

चिकित्सा—जब विषयुक्त भोजन सामने आजावे तो उसकी

भाप से शिर का घूमना, या पीड़ा, दिल का घुटना इत्यादि हो जाता है, उस भोजन को दूर कर देना चाहिए; और कुष्ठ, हिंगु, उशीर (खश) और मधु (शहद) को पीसकर नस्य देना चाहिए। इन्हीं को नेत्रों में अंजना चाहिए, और शिरीष, हल्दी और चन्दन इन का सिर पर लेप करना चाहिए और दिल पर चन्दन का लेप श्रेष्ठ है। इससे शान्ति आजायगी, या सिर पर अमृतधारा लगाना या अमृतधारा की थोड़ी नस्य लेना और दो बिन्दु खानी चाहिए। यदि विषयुक्त भोजन का ग्रास उठाया जावे, और उसमें विषविशेष हो तो उससे हाथ में जलन होने लगती है, और नख फटे से हो जाते हैं, उसी क्षण भोजन को त्याग कर अमृतधारा मर्दन कर दें। या निम्ब गिलोय नेत्रबाला (नीलोफर) का लेप करदें॥

ग्रास के विष की परीक्षा—यदि भोजन में विष की परीक्षा न की जावे और मुख में ग्रास चला जावे, तो उससे जिह्वा खुरदरी हो जाती है, स्वाद चला जाता है, जिह्वा में पीड़ा या जलन भी हो जाती है, और मुख से लार बहने लगती है। तत्काल ग्रास को बाहर निकाल कर अमृतधारा अन्दर और बाहर मर्दन कर देनी चाहिए, या कुष्ठ, मधु, हरिद्रा, उशीर (खस) को मुख में धारण करना चाहिए॥

यदि आमाशय में विष पहुंच जावे—यदि वह खाने का विष मुख में भी न पहिचाना जावे, और खाया जावे, तो सञ्ज्ञानाश, वमन, अतिसार, आध्मान, तपन, कम्प, इत्यादि होने आरम्भ होते हैं, ऐसी अवस्था में तत्काल मैनफल, कटु तुम्बिका, कटु तुरई, ३—३ माशा ऊष्णजल से खिलाकर, वमन करावें, दही के पानी या चावलों के धोवन से भी वमन होजाता है, प्रयोजन यह है कि जब विष आमाशय में हो तो वमन कराना तात्कालिक उपचार है, और तत्पश्चात् प्राकृत अवस्था के स्थापनार्थ अमृतधारा ३-३ बिन्दु जल में डालकर ४-५ बार देवें॥

विष अन्त्रियों में प्रविष्ट होजावे—यदि विषभक्षित को विलम्ब

होगया हो, और भुक्त पदार्थ पक्का होकर आमाशय से गमन करता हुवा अन्त्रियों में प्रवेश कर गया हो (दो घंटे के पश्चात्) तो उससे जलन, मूर्च्छा, अतिसार, अंगों में पीड़ा, निर्बलता, पीत अथवा श्यामवर्णता हो जाती है, इस अवस्था में विरेचन देना उचित है, कालादाना ३ माशा घृत में मिलाकर देवे, ताकि रेचन होजावे, अथवा दधि और मधु के सहित चौलाई इत्यादि पान करावें, अथवा अन्य कोई उचित रेचक औषधि दें, तत्पश्चात् प्राकृतिक स्थिति और अवशिष्ट दोषनिवारणार्थ अमृतधारा देना उचित है ॥

पानीय पदार्थों में विषपरीक्षा—दुग्ध, मद्य, पानी इत्यादि में यदि विष संयुक्त किया गया हो तो उस में कई प्रकार की रेखायें होजाती हैं, अथवा फेन, बुलबुले उत्पन्न होजाते हैं, यदि उस में अपनी छाया देखी जावे तो प्रथम तो दृष्टि ही न पड़े, और पड़े भी तो छिद्रयुक्त और बिगड़ी हुई दिखाई देती हैं, अथवा दो दृष्टि पड़ेंगी। (स्मरण रहे कि सम्प्रति नवीनविष जो सत्वइत्यादि निकालकर तैय्यार किये जाते हैं, उन में प्रायः यह लक्षण जो सुश्रुत में लिखे हैं नहीं भी होते, क्योंकि उस समय यह नहीं थे, उस समय जो विष दिये जाते थे हलाहल होते थे) ॥

शाकादि में विषपरीक्षा—शाक, दाल, भात, तरकारी आदि में यदि विष प्रविष्ट किया गया हो तो उनका स्वाभाविक स्वाद नष्ट होजाता है, फट से जाते हैं, उसी समय बासी हुये २ ज्ञात होते हैं, सुगन्धित होकर दुर्गन्ध सी हो जाती है, पक्के फल फूट जाते हैं, और अपक्व पक्व से होजाते हैं ॥

दातुन में विषपरीक्षा—यदि दन्तधावनी में किसी हलाहल विष को लगाया हो तो उसकी कूंची फटी छिदरी और बिखरी हुई होती है, और मुख में प्रविष्ट करने से जिव्हा मसूढ़े आदि में शोथ होजाता है। चिकित्सा यह है कि भल्लातक, हरीतकी, जामन की गुठली, पीसकर मधु में मिलाकर शोथस्थान पर पछने

लगाकर मर्दन कर देवें, अथवा अमृतधारा मर्दन कर देवें, और खिला भी देवें। अथवा अङ्कोल की जड़, सातला की छाल और सिरस के बीज मधु में मिलाकर शोथस्थान पर मर्दन कर देवें, जांभी को यदि विष लगाया गया हो तो उस की भी यही चिकित्सा और परीक्षा है ॥

मर्द्य (मालिश के) पदार्थों में विषपरीक्षण—यदि मर्दन के पदार्थ तैल इत्यादि में विष प्रविष्ट किया गया हो तो वह गाढ़ा, गदला सा होजाता है, वर्ण विपर्यय होजाता है, मलने से जलन होती है, फफूले अथवा घाव होजाते हैं, पीड़ा होती है और पानी बहता है, त्वचा पक जाती है, स्वेद आता है और ज्वर होजाता है, चर्म फट जाता है। यदि ऐसा हो तो सरद पानी से स्नान करके चन्दन, बालछड़, कुष्ठ, उशीर (खस) बांस पत्री, गिलोय, सोमवल्ली, श्वेतचन्दन, नेत्रवाला, तज, श्वेता, इनमें से जितनी मिलें पीस कर शरीर पर लेप करें, और इन्हीं पदार्थों को थोड़े से कैथ के रस अथवा गोमूत्र के साथ पिलावें। अथवा श्वेतचन्दन घिस कर अमृतधारा प्रविष्ट करके सब शरीर पर लेपन करदें, और अमृतधारा तीन २ बिन्दु गिलोय के अर्क में मिलाकर एक २ घण्टे के पश्चात् देवें, यहां तक कि अवस्था ठीक हो जावे। उबटन, छिड़कने के पदार्थ, बिस्तरे वस्त्र इत्यादि में जो विष डाला गया हो तो उसके भी यही लक्षण और उपचार हैं ॥

लेप्य (लेप की वस्तु) में विषपरीक्षण—यदि शरीर के किसी अंग पर लेप करने वाली चन्दनादि वस्तु को विष युक्त किया गया हो तो वहां के केश व रोम गिर जाते हैं अथवा निर्बल हो जाते हैं। शिर पर लगाने से पीड़ा आरम्भ होती है, विशेष समय तक रहने पर रोमों से रक्त बहना आरम्भ हो जाता है, और चेहरे पर गांठें पड़ जाती हैं। इसमें गोबर का रस या मालती अथवा मूषापर्णी अथवा गृहधूम्र (घर के धुआं) का लेप करना उचित है।

अथवा काली मृत्तिका को तैल, कन्याकुमारी (घी कुमार) के गूदे, घी, प्रियंगू, काली निसोत और चौलाई इनकी भावना देकर अर्थात् इन में रगड़ २ कर उस मृत्तिका को इस प्रकार इनका रस पिलाकर इसका लेप करना चाहिए। अथवा अमृतधारा को खिला भी दें। शिर मर्दन के तैल, अतर इत्यादि तथा टोपी, पगड़ी, इत्यादि में जो विष सम्मिलित किया गया हो तो उसका उपरोक्त लक्षण और उपचार हैं। मुख के मलने की वस्तु में यदि विष हो तो उससे मुख काला हो जाता है, और उबटन में जो कुछ विष के लक्षण वर्णित हैं वही होते हैं, और मुहासा जैसे छोटे २ दाने उत्पन्न हो जाते हैं। इसमें घृत और मधु पान कराना लाभप्रद है। घृत और चन्दन लेप करना, अर्कपुष्पी मधुकाष्ट (मलेठी), भारंगी, दोपहरिया और साठी इनका लेप करना चाहिए। अथवा अमृतधारा को घृत के साथ मिलाकर मर्दन करना और घृत में मिलाकर खिलाना उचित है॥

सवारी की पीठ पर विष—यदि हाथी घोड़े इत्यादि सवारी की पीठ पर विष लगा दिया हो तो उनके मुख से लार बहने लगती है, उनके नेत्र लाल हो जाते हैं। यदि उन पर सवारी की जावे तो गुदा उपस्थेन्द्रिय और अण्डकोष के स्थानों पर फोड़े या फफोले हो जाते हैं, उबटन इत्यादि के वास्ते जो लिखा है वही करना चाहिए॥

नस्य और धूम्रइत्यादि में विष—नस्य या हुक्का में जो विष हो तो उसके पान से मुख, नासिका या कण्ठ से रक्तस्राव होने लगता है, सिर पीड़ा हो जावे, कफ गिरने लगे, शरीर में शैथिल्य हो जावे, इस अवस्था में गोघृत में थोड़ी सी अतीस मिलाकर और घृत डाल कर पान कराना उचित है, और वच की घृत के साथ नस्य देवें। अथवा घृत में अमृतधारा खिलावें या नस्य देवें।

यदि पुष्पों में विष सम्पर्क किया गया हो तो उनकी वह सुगन्ध भी जाती रहती है और रंग भी कुछ बिगड़ जाता है कुम्हलाये हुए से

हो जाते, हैं और उनके सूंघने से सिर पीड़ा, और नेत्रों से अश्रुधारा बहनी आरम्भ हो जाती है, ऐसी दशा में उपरोक्त उपचार ही करना उत्तम है ॥

कर्णतेल विष युक्त किया जावे—यदि कर्णतेल में विष संयुक्त किया गया हो तो श्रवण शक्ति में अन्तर ज्ञात होना आरम्भ होजाता है। और पीडा आरम्भ हो जाती है, अथवा कान बहने लगता है। इस अवस्था में सतावरी का रस घृत और मधु के साथ मिला कर डालें, या अमृतधारा १ बूंद, शहद और घी के साथ मिला कर डालें।

यदि अंजन में विष मिलाया गया हो—यदि अंजन में विष हो तो उससे नेत्रों से अश्रुपात, जलन या भवों में पीड़ा होने लगती है, दृष्टि मन्द हो जाती है। इसमें तत्काल दो चार पीपल खाकर घी पीना चाहिए। तथा वरना का गूंद और मेढासींगी नेत्रों में डालना चाहिए। समुन्दर फेन, गोलोचन इनको मिला कर सुरमा लगावें, या कैथ का फूल वा मेषश्रृंगी का फूल, या भल्लातक पुष्प का अंजन करे, अथवा अमृतधारा घृत मिलाकर नेत्रों में लगाएं और घृत पीपल पिलावें ॥

काष्ठोपानत् (खड़ाऊं) पर विष—यदि खड़ाऊं पर विष लगाया गया हो तो इन से पाओं में शोथ फफूले पड़ जाना, पीप हो जाना, यह लक्षण होते हैं। उपानत् (जूता) आसन, गद्दी, कुरसी, इत्यादि पर विष हो तो भी यही लक्षण होते हैं। यदि दीवारों में विष का संयोग हो तो उनकी चमक जाती रहती है। यदि लग जावे तो उससे जलन और फफूले, फटना होता है। ऐसी दशा में वही लेप करें और वही खिलावें जो ऊपर वर्णन कर आए हैं ॥

मिश्रित उपचार

महासुगंधि नाम की अगद (फादजहर) जो हम अभी लिखेंगे, उसको वैद्य लेप, नस्य, और अंजन आदि सब कामों में प्रयुक्त करें, आंतों में विष प्रवेश हो जावे तो तेज विरेचन देना

चाहिए, यदि आमाशय ही में हो तो विशेष वमन कराना, और रक्त प्रविष्ट हो जावे तो शिरा बेध कराकर अथवा श्रृंगी इत्यादि से जैसा उचित समझें, रक्त मोचन करवाना उचित है मूषिका और अजरोहा हाथ में बांध देने से भी प्रत्येक प्रकार का विष दूर हो जाता है, और विष का कुछ लेशमात्र भी असर नहीं रहता (मूषिका एक छोटी रोंगटेवाली काले चूहे की तरह बूटी होती है, और अजरोहा एक सफ़ेद कंद सा होता है, अफ़सोस कि इनका आजकल कुछ पता नहीं लगता है ॥

यह है जो राजा के वास्ते सब से प्रथम सुश्रुत में वर्णन किया है। सोचने से ज्ञात होगा कि हम लोगों को भी इनकी आवश्यकता रहती है। किसी समय कोई वस्तु वैरभाव से आमाशय में प्रवेश कराई जाती है, कभी असावधानी से हो जाती है, मुझे स्मरण है एक विवाह में जो उड़द की दाल पकाई गई तो उसमें जमाल गोटा मखौल के वास्ते मिलाया गया था, तो जब ऐसे लक्षण दृष्टिगोचर हों तो हम तत्काल उपाय कर सकते हैं। मान लीजिए कि वत्सनाभि कूटते समय नासिका द्वार में प्रविष्ट हो गया, या संखिया कोई औषधि बनाते समय नेत्रों में लग गया, या इसी प्रकार की अन्य कोई घटनायें होती रहती हैं, हम उसी क्षण जैसा कि लिखा है उपचार कर सकते हैं ॥

इतने लिखने के पश्चात् सुश्रुत में विषवर्णन आरम्भ होता है जिसकी मिश्रित बातें हम नीचे लिखते हैं, और प्रत्येक की पृथक् २ चिकित्सा है, वह तो पश्चात् आना है ॥

विष दो प्रकार का है। स्थावर—निर्जीव, न हिलने वाला, जैसे वृक्ष, पाषाण इत्यादि, और जंगम जीवधारी—जैसे सर्प, बिच्छू इत्यादि ॥

स्थावर विष स्थान—स्थावर विष दश स्थानों में रहता है। जड़, पत्ते, फल, फूल, छाल, दूध, गोंद, सत्व (जैसे कि विलायत वालों ने अब कई पदार्थों के सत निकाल लिए हैं, जो विषैले हैं)

कन्द और धातु । प्रयोजन यह है कि किसी के मूल में विष होता है किसी के फूल में इत्यादि २ ॥

इसके आगे सुश्रुत में सब गणना ही की गई है कि अमुक २ की जड़ में विष होता है और अमुक २ के पुष्प में इत्यादि । परन्तु नाम वह ऐसे लिखे हैं कि उनमें से बहुधा समझ में ही नहीं आते हैं । उन नामों का उद्धृत करना व्यर्थ है, अतः उल्लेख नहीं करेंगे । सुश्रुत इतने समय की प्राचीन पुस्तक है कि उसके नाम और पीछे के नामों में जमीन और आसमान का अन्तर पड गया है, जो नाम समझ में आते हैं उनकी चिकित्सा इत्यादि जब प्रत्येक के सम्बन्ध में लिखा जावेगा तब लिखी जावेगी । हां इतना यहां लिख दें कि ८ की मूल में विष होता है ५ पत्ते विष हैं, १२ के फल में विष है, ५ के पुष्प विषैले हैं, ७ की छाल और गून्द में विष है, तीन का दुग्ध विषैला है, धातु, बिष हरतालादि बहुत से हैं—१३ कन्द विष है, इसी प्रकार स्थावर विष प्रायः ५५ हुए ॥

स्थावरविषप्रकारानुसार संक्षिप्त लक्षण—विषैला मूल यदि भक्षण किया जावे तो हडफूटन और अचेतना हो जाती है, विषैले पत्ते भक्षण करने से जृम्भा (जम्हाई) आती है और जोड़ टूटते हैं । विषैले फल भक्षण करने से अण्डकोषों में शोथ चलता और खाने से घृणा हो जाती है । विषैले फल भक्षण से वमन, पेट का अफरना और अचेतना होती है । छाल और गूंद जिनके विषैले हैं वह खाने से मुख में दुर्गन्ध, सिर पीड़ा, मुख में कफ व स्तंभ, यह लक्षण प्रकट होते हैं, विषैले दुग्धपान से फेन युक्त मुख होना, अतिसार, जिह्वा का ऐंठना यह लक्षण होते हैं और खानिज विष से दिल की पीड़ा, अचेतना और तालु में जलन होती है । यह सब विष अधिक मात्रा में भक्षण करने के पश्चात् मृत्यु द्वार का दर्शन कराते हैं । विषैले कन्द (कंद उसको कहते हैं कि फल पृथ्वी के अंदर हों और पत्ते बाहर, जैसे मूली, शलगम । विषैले कन्दों में सब से

प्रसिद्ध वत्सनाभि या मीठा तेलिया है) १८ प्रकार को होता है, प्रत्येक के पृथक् २ लक्षण होते हैं, उनका हम यहां वर्णन नहीं करते। प्रत्युत हर एक का जब पृथक २ वर्णन होगा तब लिखेंगे ॥

विषों के गुण—सर्व विषों में निम्न लिखित गुणों में से कोई होते हैं शुष्क, उष्ण, तेज, सूक्ष्म (शरीर के सूक्ष्म छिद्र में प्रविष्ट हो जाने वाला) व्यवायी (प्रथम शरीर में फैल कर पीछे पाचन होने वाली) विकाशी (साथ बंधनों को शिथिल करने वाला) विशद (जो पिछिल न हो कठिन) लघु और न पचने वाला, इन गुणों के कारण विष विष हुआ करता है, इस की रूक्षता से वायु का प्रकोप होता है, उष्णता से रक्त तथा पित्त, तीक्ष्णता से अचेतना होती है और संधिबंधन शिथिल हो जाते हैं। सूक्ष्मता के कारण शीघ्र शरीर के प्रत्येक अंग में प्रविष्ट हो कर उनके कार्य को नष्ट भ्रष्ट करता है और आशु अर्थात् शीघ्र रक्त में प्रविष्टता के कारण प्राण हर लेता है और व्यवायि होने के कारण सर्व शरीर को स्वगुणानुरूप कर देता है और विकाशी होने के कारण दोष, धातु और मल को नाश करता है और विशद होने के कारण शक्ति हीन कर देता है और लघु होने के कारण चिकित्सा कृछ साध्य होती है और अपाकि होने के कारण बहुत समय पर्य्यन्त दुःख देता है ॥

प्रत्येक प्रकार के विषों में इन्हीं लक्षणों और प्रमादों में से कुछ होते हैं, और जिसमें यह दश ही हों वह तत्काल प्राणों का नाश करता है इन लक्षणों में से कोई भी जिसमें हो उसकी विषों में गणना करनी चाहिए, और इन लक्षणों में से जब कोई भी दृष्टि पड़े तो विष का विचार करके चिकित्सा करे ॥

स्थावर घोर विष भक्षित लक्षण—निर्जीव विष भक्षण करने से सात वेग होते हैं। प्रथम वेग में जिह्वा काली और करड़ी हो जाती है और मूर्छा और श्वास होते हैं। दूसरे वेग में शरीर कापता और स्वेद युक्त होता है और दाह, कण्डू होती

है। तीसरे बेग में तालु में शुष्कता और आमाशय में अत्यन्त पीड़ा होती है। दोनों नेत्र कुरंग हरित २ शोथ युक्त हो जाती है। यह तीन वेग उस समय पर्यन्त होते हैं कि जब तक विष आमाशय में होती है (और समय होता है कि पम्प के द्वारा अथवा वमन के द्वारा इसको निकाला जावे)। पश्चात् जब विष अन्त्रियों में प्रवेश कर जाती है तो वहां पीड़ा होती है। हिक्का और कास होता है आंतें कूंजती हैं। और अब चतुर्थ वेग आरम्भ होता है, जब कि शिर बहुत भारी हो जाता है और शिर झुक जाता है। पंचम वेग में मुख में फेन या कफ बहने लगता है और वर्ण विपर्यय हो जाता है और सन्धियों में पीड़ा होती है सर्व दोष प्रकुपित हो जाते हैं और अन्त्र पीड़ा होती है। षष्ठ वेग में ज्ञान नष्ट हो जाता है और अतिसार अधिक होती है। सप्तम वेग में स्कन्ध, कटि, पृष्ठ टूटती और श्वासारोध हो जाता है॥

प्रत्येक बेगोपचार–प्रथम वेग में ठण्डे पानी से वमन करावें, मधु और घृत के साथ अगद (वह औषधियां जो विष को दूर करती हैं, सुश्रत में बहुत से अगद लिखित हैं जो हम अन्त में लिखेंगे) देवे। द्वितीय वेग मे प्रथमवेगानुसार वमन करावे और वमन के पश्चात विरेचन भी दे सकते हैं। तृतीय वेग में अगद पिलावे, नस्य देवे, सुर्मा डाले। चतुर्थ वर्ग में अगद घृत मिला कर पिलावे। पंचम बेग में मधु और मधु काष्ट मिला कर अगद औषधि देवे। षष्ठ वेग में अतिसार चिकित्सा करे और सख्त नस्य देवे और सप्तम वेग हो जावे तो असाध्य है, हां! तालु में काकपाद सदृश निशतर का निशान करके उस पर रक्त सहित नवीन मांस रख देवे, उससे यदि श्वास खुल आवे तो और चिकित्सा आरम्भ करें। नो-चेत् वह तो मृत्यु के मुख में है॥

अगद औषधी–सुश्रत में अगद (फाद जहर) औषधी जो **स्थावर विषों के वर्णन में लिखी हैं,** निम्न लिखित हैं॥

यवागू अर्थात् आशजो—जंगली तोरी, अजमोद, पान, सूर्यावर्त गिलोय हरीतकी, सिरस, कटभी, लहसोड़ा, सफेद कन्द, दोनों हरिद्रा, साठी श्वेत और रक्त त्रिकुटा (सूंठ, मिर्च, पीपल) खरेटी, सारिवा, इन औषधियों को समतौल (यदि कोई न मिले तब भी बना लें) लेकर अष्ट गुणा पानी डाल कर आंच पर रक्खें चतुर्थांश रहे तो उतार कर मल छान लेवें और इस जल में त्वचा रहित यव पकावे या यों कहो कि पानी के स्थान में इस क्वाथ में यवागू पकावे। और सरद करके घृत और मधु संयुक्त कर पिलावें। प्रत्येक विष और प्रत्येक वेग में दिया जा सकता है ॥

अजय घृत—मधुकाष्ट, अगर, कुष्ट देवदारू, हरण, पुन्नाग, एलवालुक, नाग केसर, नीलोफर, मिश्री, वायविडंग, चन्दन श्वेत, चन्दन रक्त, पत्रज, फूल प्रियंगू, ध्यामक (रोहिम घास) दोनों हरिद्रा, दोनों कटेली, सारिवा, शाल पर्णी, पृष्ट पर्णी, इनको उपरोक्त विधि से क्वमित करके इसमें समतोल अच्छा घृत युक्त करके धीमी आंच पर पकायें, जब केवल घृत रह जावे तो उतार कर छान रक्खें मात्रा २—४ तोले, प्रत्येक प्रकार के स्थावर विष का हनन करता है ॥

दूषी विष

विषावशिष्ट दोष का नाम दूषी विष है अथवा वह विष अल्प हो, उपाय न किया गया और शरीर के भीतर पुराना हो गया हो या औषधियों से दबाया गया हो, परन्तु निकला न हो, अथवा वह विष ही इस प्रकार का हो कि मृत्यु या भयंकर कोई रोग तो नहीं कर सकता परन्तु कफ में लिपटा हुआ वर्षों शरीर में रहता है ॥

जिस मनुष्य के शरीर में दूषी विष अवशिष्ट हो उसके शरीर और मल के वर्ण में अन्तर आ जाता है। मुख में दुर्गन्धि और रसना शक्ति बिगड़ जाती है, तृषा अधिक हो जाती है। कभी अचेतना और वमन भी हो जाती है। यदि यह आमाशय में रहता है तो उस पुरुष को बात, कफ के रोग होते रहते हैं, और यदि

पक्वाशय(आंतों) में हो तो बात पित्त के रोग सताते हैं, और सिर के बाल और रोम उखड़ जाते हैं और यदि किसी धातु रस वा रुधिर वा मांस, मेदा, हड्डी या मज्जा वीर्य्य में स्थित हो जावे, तो जिसमें स्थित हो उसकी खराबियां आरम्भ होती हैं, सरद वायु और मेघ और वर्षा ऋतु में यह विष उपस्थित होता है। इसके दूषित होने से प्रथम यह लक्षण होते हैं, निद्रा का अधिक आना, शरीर भारी हो जाना जृम्भाधिक्य, रोम हर्षता, अंगड़ाई, पश्चात विष अपना वेग प्रकट करता है। पाचन शक्ति की विनष्टता, भोजन में अरुचि, शरीर पर चकत्ते धप्पड़ इत्यादि, कभी अचेतना, हस्त पाद में शोथ, धातु नाश, जलोदर, वमन, अतिसार, वर्ण परिवर्तन, कदाचित ज्वर, अत्यन्त तृष्णादि उपद्रव होते हैं कोई विष दूषित होकर उन्मादी बनाते हैं अथवा अपस्मारादि करते हैं, कोई पेट फैला देता है, कोई वीर्य विकार कर देता है। कोई स्वर विकृत कर देता है, किसी के कुष्ट के से लक्षण हो जाते हैं। इत्यादि इत्यादि ॥

विषारी नाम अगद

यदि कोई दूषी विष का रोगी हो अर्थात् उसके भीतर विष स्थित हो तो उसको स्वेद कर्म करावें और तत्पश्चात् वमन विरेचन देवे और अनन्तर इसके निम्न लिखित अगद पिलाया करें। योग—

पीपल, बालछड़, लोध, धनियां, जवाखार, छोटी इलायची, नेत्र वाला, सोना गेरु प्रत्येक करीव ३ माशे लेकर काथ करके मधु मिला कर पिलाया करें। बलवान मनुष्य का दूषी विष शीघ्र दूर हो जाता है। वर्ष व्यतीत होने पश्चात कृच्छ् साध्य हो जाता है और यदि कोई कुपथ्य करता रहे तो उपाय हो ही नहीं सकता ॥

इसके आगे जंगम विष अर्थात जीवधारियों के विषों का वर्णन सुश्रुत ने किया है और इसमें जो साधारण बातें हैं उनको हम नीचे उद्धृत करेंगे ॥

स्थावर विष के षोडश स्थान

दृष्टि—दिव्य सर्प एक प्रकार के होते हैं जिनकी दृष्टि में विष होता है, जहां दृष्टि उन्होंने की मनुष्य वहां का वहां विष से भर कर रह जाता है इसी प्रकार उनके श्वास में भी विष होता है जिसको फूंक लगा दी उसी समय भस्म हुआ ईश्वर बचावे ॥

डाढ़—साधारण सर्पों की दाढ़ में विष होता है ॥

डाढ और नख—बिल्ली, कुत्ता, बन्दर, मगर, मेंडक, एक प्रकार की मछली, गोह, शम्बुक (एक पानी का जानवर) प्रचालक (एक प्रकार का कृमि) छपकली और चार पैर वाले जीव इन की डाढ़ों और नखों में विष होता है ॥

मल और मूत्र—चिपिट, पिच्चटक, कषायवासिक सर्षपवासिक, तोटकवर्च, कीट कौंडिल्य, इन के विष्टा और मूत्र में विष होता है, इन के सामान्य नामों का कुछ पता नहीं लगता है या तो वह जीव ही नहीं रहे या भाषा में बहुत अंतर हो गया है ॥

वीर्य्य—कई प्रकार के चूहों के वीर्य्य में विष होता है, मकड़ी के लार, मूत्र, विष्ठा, दन्त, नख, वीर्य्य, और आर्तव में विष होता है। मकड़ी कई प्रकार की होती है उनका वर्णन पृथक् २ अवसर पर किया जावेगा ॥

पीठ का डंक—बिच्छू, विश्वम्भर, राजीव मछली, उच्चिटिंग, समुद्र का बिच्छु और भिड़ के पृष्ठ भाग डंक में विष होता है। चित्रशिर, सराब, कुर्दित शत दारुक, अरिमेदक, और सारिकामुख (इनके भी भाषा के नाम नहीं मिलते) इनमें मुख, संदश, विशार्द्धित मूत्र और पुरीष में विष होता है, मक्खी, कणभ और जोंक इन के मुख की पकड़ में विष होता है। विषमृतास्थि और सर्पास्थि यह अस्थि विष हैं। कई प्रकार की मछलियों के पित्तों में विष होता है। सूक्ष्म तुण्ड, उच्चिटिंग बरटी (च्यूंटा) शतपदी (कनखजूरा) शूकवल

(कातरा) भ्रमर इनके कांटों और तुण्ड में विष होता है। इनके अतिरिक्त जो विषैले जन्तु नहीं कह गए हैं उनका विष सब मुख में जानो, अर्थात् वह काट कर विष देते हैं। इसके आगे जल वायु में विष संचार के लक्षण और उपचार सुश्रुत ने वर्णन किया है, उसके वर्णन से प्रथम इतना लिखना आवश्यक है कि यह सब उपाय—

प्लेग के दिनों के वास्ते भी ऐसे ही उपयोगी है—

प्लेग क्या है—सुश्रुत ने बताया है कि सर्पों की विष्ठा, मूत्र, वीर्य, अस्थि मांसादि के सड़ने के कारण एक प्रकार के कृमि उत्पन्न होते हैं जो चूहों में प्राप्त होकर माहमारी या प्लेग उत्पन्न करते हैं और इन से वह माहमारी मनुष्यों में संचार करती है और सहस्रों को नष्ट करती है। पस प्लेग एक प्रकार का विष है जिसका असल सर्पों से है गोया कि जंगम विष है और यह जल वायु इत्यादि में प्रवेश कर उसको दूषित करके सहस्रों को नष्ट करता है, यह पुस्तक इस विषय पर नहीं है कि हम पूर्णतया लिख सकें इतने ही से आप समझ गए होंगे कि वह चिकित्सा जो सुश्रुत आगे वर्णन करता है इस वास्ते भी उपयोगी लिखा है कि प्राचीन समय में राजा के दुशमन उसके देश के जलादि में विष फैला देते थे, वा एक राजा जब दूसरे को नष्ट करना चाहता तो ऐसी युक्ति करता था कि उस समय वह विष प्राप्त करके भी प्रसरण कर देता था जिस का वर्णन आता है। हम ने ज्ञान से ज्ञात किया है कि, क्योंकि प्लेग भी एक प्रकार का सर्पों का विष ही प्राकृतिक प्रसरण प्राप्त है, इस वास्ते निसंशय यह चिकित्सा और शुद्धता की रीती प्लेग के वास्ते उपयोगी हैं। गो गवर्नमेण्ट से हमारी प्रार्थना है कि डाक्टरों की थियोरियों के साथ एक हमारी इस छोटी सी बात का भी अनुभव करें, और देखें कि क्या यह वस्तुतः सर्पों का विष नहीं है और यदि है तो उसको इन (Occulation) आक्यूलेशन—

लिखा है कि राजा के विरोधी मार्ग में या देश में घास जल वायु, चन्न, धूम्र को विषयुक्त कर देते हैं। उन को निम्न लिखित लक्षणों से जान कर चिकित्सा करे, स्मरण रहे कि निम्नलिखित लक्षण अधिक विष के हैं, अल्प विष हो तो कोई २ लक्षण प्रकट होते हैं।

जल में विष--पानी में यदि विष युक्त किया गया हो तो वह कुछ गाढ़ा होजाता है, और उस में तीक्षण गन्ध और फेन होती हैं। और लकीरें सी ज्ञात होने लगती हैं, और मेंडक और मछलियां मरी हुई पाई जाती हैं, और वहां के जीव और तटस्थ जीव उन्मत्त से होकर फिरने लगते हैं, यह लक्षण विषयुक्त जल के जानने चाहियें इस पानी में जो मनुष्य, घोड़े, हाथी, इत्यादि स्नान करें या पीवें उन को विष से संज्ञा नाश ज्वर, ज्वलन, शोदि हो जाते हैं ॥

इस की शुद्धी--धाय के फूल घोड़े कन्नी (पीपल के पत्तों का सा वृक्ष वा पीपल) देवदारु, नीम, धूप, पाडर, लाललोध, सम्भा, चील वृक्ष, मोखा वृक्ष, किरमाला, प्रसारणी, कशादि वृक्षों के छाल आदि को जलाकर उनकी भस्म को कूओं, तड़ागों, नदियों इत्यादि में डाल देवे और थोड़ा जल चाहिये तो घड़ा भर कर उस में एक मुष्टी भस्म को डाल कर हिलाकर रख देवे, जब राख नीचे बैठ जावे और पानी स्वच्छ हो जावे तो उस का पान करे, मेरी राय में प्लेग के दिनों में यदि गवर्नम्यन्ट सब कूपों को इस प्रकार शुद्ध करने का भार लेवें तो सौभाग्य नो चेत् प्रत्येक मनुष्य को जितनी औषधियां मिलें लेकर राख कर के अपने घरों में इस प्रकार पानी पीना उचित है ॥

डाक्टरों ने जल शोधन के अर्थ परमैंगेनेट आफ पोटाश निकाला है, और निसंशय यह सर्व विष को उपयोगी है, परन्तु इस के कुओं में डालने से हमारा इस वास्ते संकोच होना चाहिये कि यह स्वयं विष है और विष युक्त जल के भीतर मेंडक मत्स्यादि का मरण जैसाकि उपरोक्त है इस में भी होता है कृमिघ्न अवश्य है। जब रोज

कृमि पड़े ठीक है, इस औषधि मिले जल को तो फिर शोधन की आवश्यकता है ॥

विषयुक्त पृथ्वी--यदि विष पृथ्वी में फैलाई गई हो तो उसको पत्थर, स्थान, घाट, मार्ग, सड़क इत्यादि को मनुष्य हाथी, घोड़ा, इत्यायि इत्यादि का जो जो भाग जहां जहां स्पर्श करे वह भाग या तो सूज जावे या जलने लगे अथवा बाल गिरने लगें और नख फटने लगें ॥

इस की शुद्धी--वांबी की मृत्ति जल में घोल कर छिडकनी चाहिये वा बायबिडंग, पान, माल कंगनी, इनको पानी में पीस कर अच्छी प्रकार छिड़क देवें वा अनन्ता और सर्व गन्ध शराव में पीस कर छिड़के और यही देशी फिनाइल समझना चाहिये, यहां अनन्ता और सर्वगन्ध औषधियां छिड़कनी लिखी हैं । पीपल, दूष, हरड़, गिलोय, सफेद घास, अरणी, कल्हारी, धमासा, आंवला, चोक, इन सब का नाम संस्कृत में अनन्ता है । यह सब डालनी चाहिये या जितनी मिलें ॥

और सर्वगन्ध निम्नलिखित का नाम है, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नाग केसर, सरद चीनी, लौंग, तगर, सुंदरस, इन सब औषधियों को शराब में पीस कर रक्खें गाढ़ा गाढ़ा बोतलों में भर रक्खें, जब आवश्यकता हो पानी में मिला कर छिड़कें, और तुलना करें इस सुगन्धित डिसइन् फिक्टेन्ट का फिनाइल दुर्गन्ध युक्त सिर पीड़ा उत्पन्न करने वाली से, लेकिन क्या किया जावे सस्ती है और सब डाक्टर लोग उसको उपयोग में लाते हैं ॥

विषयुक्त घास तृण इत्यादि--यदि घास विषैला किया गया हो तो उस के चरने से घोड़े हाथी थक जावें, वा अचेत हो जावें, वमन आने लगें और अति सार होने लगें, अथवा मरही जावें एसे घास को दूर कर देना चाहिये ॥

वाद्योपचार--चान्दी का बुरादा, पारद, इन्द्र गुप्ता (बीर बहुटी) सम भाग इनके समान हिंगुल डालकर घी कंयार के गूदे में मिलाकर बाजों, ढोलादि पर लेप कर देवें, और बजवावें, इन के शब्द से भी विष निवृत्ति होती है। पशुओं में जब कभी रोग आता है, तो लोग केवल ढ़ोल बज वाते हैं, इन औषधियों को लगाकर बजवाना चाहिये इस आवाज से न जाने उन मवेशियों में क्या शक्ति उत्पन्न हो जाती है, कि जिस से विष दूर हो जाता है ॥

विष युक्त वायु और धूम्र--यदि वायु वा धूम में विष संयुक्त किया जावे, तो पक्षी पृथ्वी पर गिरने लगते हैं, और मनुष्यों के कास, प्रतिश्याय शिर पीड़ा और नेत्र रोग हो जाते हैं।

वायु शोधन--लाक्षा, हरिद्रा, अतिविषा, हरीत की, मुस्ता, रेणुका, इलायची, पत्रज, दारचीनी, लोध्र, तज, कूठ, प्रियंगू, इनको अग्नि में जला कर धूम्र कर के वायु को शुद्ध करले, इस के अतिरिक्त हमारी सम्मति में निम्न लिखित औषधियां भी डाली जावें तो उत्तम है, निम्ब, बायबिडंड, गिलोय, अर्क पुष्प, शीशम, देवदारु, कपूर, जायफल, जातिपत्र, धूपलकड, जटामासी, मुश्कवाला, इत्यादि इसी प्रकार वायु शोधन के लाभ देखने हों तो हमारी पुस्तक "प्लेग के प्रतिबंधक उपाय" मंगवाकर पढ़ें यह वर्णन यहां शेष हुवा, और जो मिश्रित वार्त्तायें हैं, नीचे लिखते हैं ॥

विष में सर्व दोषों को दूषित कर देने वाली शक्ति होती है, विष के कारण यह अपना कार्य्य त्याग देते हैं, अतः विष अपक रह जाता है, पश्चात कफ से कंठा वरोध के कारण श्वास रुक जाता है, इस कारण से यदि मनुष्य मरता नहीं है तथापि मृत सदृश पड़ा रहता है, (सर्पदंशित कदाचित् इसी कारण से तीसरे दिवस जी उठता है) जो विष अत्यन्त उष्ण है उसको शीतलोपचार उपयोगी होता है,

सामान्य कृमि का विष तेज उष्ण नहीं होता है, अपितु वात, कफ जन्म होता है, बात कफ का जो विष हो उस में सोज होती है, इस में उष्णोपचार, स्वेदन कर्म अग्नि तापादि श्रेष्ठ है, विष का कार्य्य है कि सर्व शरीर में व्यास होकर (इस का वर्णन हम सर्प के विष के वर्णन में पूर्ण तया करेंगे) कन्धों में आकर स्थित हो जाता है, इस वास्ते विषयुक्त शस्त्रों से विधे हुये और सर्पदंशित के मांस को जो खाजावे तो उसमें विष के उपद्रव आजाते हैं, और अधिक हो तो मर जाता है, पस विष से मरे का तत्काल मांस भक्षण न करे तथा न किसी सर्पादि के डसे वा विष युक्त शस्त्र से काटे हुये का मांस भक्षण करे एक दिन तक यदि ज्ञात होकि तीक्षण विष नहीं है, नहीं वह पशु विसंज्ञ हुवा है और न मरा है, तो उस के स्कन्ध पारत्यिग कर अवशिष्ट मांस भक्षण कर सकता है, मांस भक्षी सदैव स्मरण रक्खें कि स्कन्धों के समीप का मांस अभक्ष्य है ॥

जिसको विषैले जंतु ने काटा हो उस के लक्षण--गृह धूम सदृश वायुशरित मल त्याग करे, पेट फूल जावे, रुधिर अत्यन्त उष्ण हो, अश्रपात हो, रंग बिगड़ जावे, शक्तिहीन हो जावे, मुख से फेन युक्त वमन हो तो जान ले कि इसने विष भक्षण किया है, अथवा किसी विषधारी जानवर ने डसा है ॥

हृदय चेतना का स्थान है, विष इस में व्याप्त होकर स्थित हो जाता है, इसी कारण विषे से मरे हुये का हृदय ठीक नहीं दग्ध होता है ॥

असाध्य लक्षण--जिस दंशित मनुष्य को शस्त्र से काटने पर रुधिर न निकले, और कोड़ा चाबुकादि मारने से रेखा न पड़े और शीतल जल क्षेपण से रोम खड़े न तो यह असाध्य लक्षण जानें ॥

जिस की जिव्हा काली पड़ जावे वा श्वेत हो जावे और केशो पाट न आरम्भ हों, नासिका टेढ़ी हो जावे, भाषण गूंगा पड़ जावे

और दंशित स्थान पर ऊदा शोथ हो जावे और हनुस्थिरता हो जावे तो यह भी असाध्य जानो जिस के मुख से कफ की वर्त्तिसी घनी गाढ़ी गिरें, और मुख गुदा और लिङ्ग से रुधिर गिरे, सर्व दन्त गिर पड़ें, तो वह भी असाध्य है । जो अति उन्मादी हो भाषण न कर सके वर्ण बिगड़ जावे, और बहुत हानियां हो कर मरने वाले की सी दशा होने लगे वह भी असाध्य है ॥

(सुश्रुतस्य साधारण वर्णनंपूर्त्तिमगमत्)

विषधारी और प्राण हारी पार्थिव सर्पादि को दूरी करण

वर्णन--ग़ार के पत्ते जिस स्थान पर फैला दिये जावें, वहां कोई पार्थिव कृमि नहीं आते ग़ार एक वृक्ष शाम देश में होता है ॥

नील मणि का अंगूठी मे धारण रखना भी इनको समीप नहीं आने देता शिलरस ज़ैतून के तेल में घोलकर या सुनोदर के पत्ते और ताजा मुरवोल कूट छान कर जैतून के तैल में पका कर रख छोड़ें, जब चाहें उसे शरीर पर मर्दन कर दे, कोई पार्थिव कृमि नहीं दुःख देगा, यदि घर में लकलकया मोर या बारहसिंघा या जंगली चूहा या न्योला पालित हो तो उत्तम है, बहुत से कीड़े इनके भय से नहीं निकलते, पृथक २ का वर्णन भी करते हैं ॥

न्योला--तितली की गन्ध से भागता है ॥

दीमक स्योक--चुनार या दूर्वा के पत्तों के धूम से मर जाती है, कनेर के कथित पानी के छिड़कने से भी मर जाती हैं, जिस घर में हुद हुद (खाती चड़ा) हो वहां दीमक नहीं रहती है, हरड़ को जलाकर उस की भस्म छिड़कने से भी जाती रहती है, यदि मिट्टी के तेल में नीला थोथा घोल कर छिडक दें तो पुस्तकों में कदापि दीमक नहीं लगती, हींग तैल में मिलाकर छिड़कने से भी दीमक भाग जाती है, दीवारों पर नीलाथोथा कलई ये मिलाकर सफैदी करे ॥

पतङ्गा--चिराग़ में प्याज़ रखदें तो बहुत ही कम आता है ॥

सिंह--कुकड़े की आवाज से भागता है, चूहे और भेड़िये से भय खाता है, जहां जंगली प्याज हो उस स्थान के समीप नहीं आता, अग्नि से भागता है, कहते हैं यदि न्योले की जिव्हा जूती के भीतर सींदी जावे तो सर्वफाड़ खाने वाले पशु इस के पहनने वाले के आधीन होते हैं, यदि वह चाहे तो सिंह पर आरोहता कर सकता है, सिंह उसे कुछ दुःख नहीं देगा बकायन के पत्ते सर्व फाड़खाने वाले पशुओं की मौत का कारण है ॥

मच्छर--भूसी, सरब की लकड़ी सरब के पत्ते राल, प्याज के बीज, मोरद के पत्ते, गन्धक, भेड़ की मींगणी, गूगल, कालादाना, गाय का गोबर, अनार की लकड़ी, माजूफल, बारह सिंगा का सींग, वा फिटकड़ी की धूनी से भागते हैं, गुलसनोवर १ भाग, अजवायन ३ भाग, कड़वे तेल में पकाकर धूनी करे, और जतून का तैल मर्दन करें मच्छर न काटेंगे। यदि सख की टहनी और पत्ते कपड़ों में रख दें तो मच्छर समीप न आवेंगे, यदि हरताल, नोसादर को चरबी संयुक्त करके किसी स्थान में कुछ दिवस धूनी दें तो मच्छर उत्पन्न न होंगे, अनुभूत है। यदि कलंजी वा हरमल वा अमरबेल वा तितली वा राकला का क्काथ घर में छिड़क दें तो कुल मच्छर निकल जाते हैं, जेतून का तैल नीबू के अर्क में मिलाकर शरीर पर मर्दन करें तो वह दुःख दाई न होंगे, दालचानी और लौंग के पानी को मिलाकर छिड़कने से मच्छर समीप नहीं आते मिट्टी के तैल की गन्ध से भी मच्छर और खटमस दूर होते हैं। साबून और मिट्टी के तैल को मिलाकर गाढ़ा कर के रखना, और हाथों व पाओं पर मलना एक अंग्रेज का अनुभव है। सरू (सरव) की काष्ट और पत्ते, तुलसी के पत्ते, अरंड के पत्ते, बिस्तरे पर रखने से मच्छर नहीं आते, तुलसी विशेष रीति से गृहों में लगानी चाहिये ॥

पिस्सू--इन्द्रायण (तुम्मा) शुष्क तितली, काली अमलतास,

गोखरू पानी में क्वाथ कर के घर में छिड़क दें, सब पिस्सू मर जावेंगे, वा भाग जावेंगे, गन्धक, कनेर के पत्तों का धूम भी इनको मारदेता है, टेसू के पुष्प या यवानी अजरायल विस्तरे पर रखने से पिस्सू नहीं आते ॥

सर्प–प्रत्येक प्रकार का सर्प बारहसिंघा के सींग, बकरी के सुम और बालों, गन्धक, मनुष्य के केशों, राल, गूगल, बिरोजा, अनार की लकड़ी, सोसन की जड़, अकरकरहा, की धूनी से भागता है, यदि घर में सर्प निकलता है तो शुक (तोता) का पंख रक्खें पुनः दृष्टि गोचर न होगा, गन्धक और नोसादर सिरका में मिलाकर या राई में मिलाकर सर्प की बम्बी में डाल दें, सर्प या तो मर जावेगा या भाग जावेगा, राई और नोसादर के पानी को घोलकर के भी डालते हैं, जहर मोहरा असल सर्प मुख में प्रविष्ट किया जावे तो तत्काल मर जाता है, यदि नोशादर मुँह में घोलकर सर्प पर कुल्ली कर दें तब भी मृत प्रायः होजाता है, यदि धागे को बिरोज़ा में लिप्टाकर के अपने समीप बिछा दें तो कोई जानवर समीप नहीं आता, नीलमणि का हाथ में रखना अधिक उपयोगी है, सर्प समीप नहीं आता बल्कि कहते हैं जब इस पर दृष्टि पड़ती है तो उसी क्षण मर जाता है, क्योंकि उस के नेत्र पानी होकर बह जाते हैं, कुटकी कूटकर सर्प के बिल में डालने से वह मर जाता है, यदि मरे चमगादड़ को घर में गाढ़ दें तो सर्प भाग जाता है, प्याज और लशुन की धूनी से भी भाग जाता है, जमालगोटा महीन पीस कर जहां संशय हो वहां छिड़क दें, सर्प को धूआं बहुत बुरा लगता है, कपड़े का धूआं पहुंचावे या गन्धक का तीक्ष्ण धूम तो वहां से कहीं चला जावेगा, सर्प भक्षी बकरे का चर्म घर में रखने से सब सर्प भाग जाते हैं, और समीप नहीं आते, सर्प भक्षी बकरा (मारखोर) पहाड़ों के भीतर केवल सर्प भक्षण करता है, मरुवा जिस घर में हो कहते हैं उस घर में भी सर्प नहीं आता है ॥

खगोला एक काले रंग का पाऊं वाला जानवर है, जो दीवारों की जड़ों और कूड़ों में रहता है, पंख वाला और निर्पक्षी, दोनों प्रकार का होता है, चुनार के पत्तों की धूनी और क्राथ से भागता और मर जाता है ॥

मक्खी--हरताल की धूनी, नकछिकनी, और कुटकी का क्राथ, प्याज जंगली की गन्ध से मरजाती है, कपूर जेतून का तेल हरताल से भाग जाती है, कहते हैं कि यदि नकछिकनी और हरताल की मक्खी बनाकर किसी स्थान पर रख दें, तो मक्खियां वहां से भाग जाती हैं, नीलाथोथा इसे मारदेता है, अकरकरहा, गन्धक, निरमिशी की जड़, कोपानी में पीसकर दीवारों पर छिड़कने से सब मक्षिकायें निकल जावेंगी या मर जावेंगी, किसी भी जीव को मारना ठीक नहीं, भगाना ही ठीक है विलायत से मक्खीमार कागज भी आते हैं, वह भी ठीक है ॥

भेड़िया--एक घास खानिकुज्ज़यब यूनानी पुस्तकों में लिखी है उस से भेड़िया मर जाता है, वह उस स्थान से भागता है, कि जहां जंगली प्याज विद्यमान हो, यदि भाला को इस के अर्क में लिप्त कर के भेड़िये को घाव युक्त करें तो वह जीवितन रहेगा, कुटकी भी इस को मार देती है ॥

छपकली--केशर से भागती है, बिल्ली तितली से भागती है, कड़वा बादाम, जंगली प्याज, उसे मार देते हैं ॥

सूस अर्थात् वह कीड़ा जो कपड़ों या पुस्तकों में लग जाता है, यदि आजबोद, कलौंजी, पोदीना, लीमों का छिलया, निम्बू का पत्ता, संदूक आदि में डाल दें, तो कीड़ा उत्पन्न न होगा, खाली अलमारी में थोड़ासा मिट्टी का तैल छिड़क दें और सूखजाने पर पुस्तकें रख कर, ऊपर के खाने में कूठ पारद कर्पूर के रखने से पुस्तकें मिट्टी और दमिक से रक्षित रहती हैं, धनिया, चन्दनादि सुगन्धित पदार्थ की

पोटली या अत्तर रखना भी कपड़ों को बचा रखता है, तमाकू भी कीड़े आने नहीं देता, फिनाईल की गोलियां भी आज कल रखते हैं ॥

बिच्छू--पिस्सू जिस वस्तु से भागता है, बिच्छू भी उसी से भागता है, गन्धक का धूआं या जंगली तुलसी के पानी के छिड़कने से बिच्छू भाग जाते हैं, यदि कुछ मरे बिच्छू जला दिये जावें तब भी दूसरे भाग जाते हैं। फिटकड़ी, कलोंजी, जीरा, कंदल, जुन्द, गूगल, बकरी का खुर जला हुवा समतोल लेकर गोलियां बनाकर कई बार जलावें, सब बिच्छू भागजावेंगे। गन्धक, हड़ताल, गधे का सुम, बकरी की चरबी, गोघृत की धूनी भी यही प्रभाव रखती है। जंगली तुलसी, मूली, मूली के पत्ते, शिलारस, बकरी की मींगनी, हड़ताल समभाग लेकर चरबी में मिलाकर बिल के समीप दग्ध करें, या थोड़े से मूली के बीज उस के भीतर डाल दें, तो वह बाहर न निकलेगा। बाबूना इन्द्रायण हरमल, लहशुन, सम्भालु के क्वाथ के छिड़कने से भी यही परिणाम निकलता है, हींग का पानी जंगली प्याज का क्वाथ अनुभूत है। पित्त प्रकृति वाले रोजादार का थूक या क्रोधित मनुष्य का फेन बिच्छू पर गिर कर मार देता है। यदि मृत चील को सुखा कर घर में रक्खें तो सर्प बिच्छू आदि भाग जाते हैं ॥

चूहा--यदि किसी चूहे को बादी खस्सी (अण्ड कोष रहित) करके या पुच्छ काट कर छोड़ दें तो सब चूहे उसके भय से भाग जाते हैं। कहते हैं कि मरे चूहे को लेकर पेट चीर कर आंतों को निकाल डाले कि सड़े नहीं फिर किसी डोरा में बांध कर लटकावे तो सब चूहे भयभीत होकर भाग जावेंगे। मुरदार संग, कुटकी, संखियां, मंडूर, केशर, अजवायन, करम शाक की जड़, जंगली प्याज से चूहे मर जाते हैं। और फिटकरी के धुयें से भी भाग जाते हैं। एक चूहा पकड कर उसे तारकूल या नीलाथोथा के पानी वा नीले रंग में गोता दे कर छोड़ दें तो भी चूहे भाग जाते हैं, तारकोल और गंधक का तेजाब मिलाकर बिलों पर लगा देने से चूहे वहां से चले जाते

हैं। कहते हैं कि घर में कोई बर्तन पानी से भर कर उनके वास्ते रख दें तो फिर तो पुनः वह अन्य किसी वस्तु को नहीं काटते क्यों कि जब चूहा पिपासातुर होता है, तब ही प्रत्येक वस्तु को काटता है। प्रायः लोग संखिया को आटे में मिलाकर गोलियां बना कर मिला मार देते हैं, यदि पानी न मिले तो मर जाते हैं। बहुधा चूने से मारते हैं, पोटास इनके समीप रखने से भी भाग जाते हैं ॥

खटमल—तुलसी से भागते हैं और मर जाते हैं। कहते हैं कि खिसका जो कांटेदार फल होता है काट कर पलंगों के नीचे टुकड़े २ करके फैला दें तो सब खटमल उनके भीतर इकट्ठे हो जाते हैं, पारा को अण्डे की सफेदी में खरल करके मिला लें पश्चत् यहां तक फेंटें कि मरहम हो जावे, पर इत्यादि के द्वारा मंचान के छिद्रों में लगावें दो चार बार ऐसा करने से दूर हो जावेंगे ॥

हाथी—अग्नि और भारी शोरगुल से भागता है, यदि छछूंदर को मारकर सुखाकर पीसकर समीप रक्खे तो उस की गन्ध के कारण कोई पशु समीप नहीं आता, प्रत्युत उस की शरीर पर मर्दन कर के मत्तेभ के सन्मुख जावे तो वह भी भागता है।

बन्दर—कुत्ते से डरता और भागता है, यदि मनुष्य भी इस से न डरे तो वह पास नहीं आता बल्कि उस से भागता है।

यूक (जूं)—यदि जन्म दिवस में बालक को जीरा के जल में स्नान करावे तो पुनः आयु पर्यन्त बालक के जूं नहीं पडती, यदि वस्त्र या शरीर पर पारह मर्दन करदें, तो सब जूएं तत्काल मर जाती हैं।

कुत्ता—यदि कुत्ते की जिव्हा जूती में किसी पड़त के भीतर सिलवायें तो उसके पहनने वाले को कोई कुत्ता नहीं भौंकता और न ही अन्य जंगली जानवर। कुचला उसे मार देता है, हरीतकी की मांगी वा कुटकी भी कुत्ते को मार देती है—यदि चरख की जिव्हा प्राप्त हो तो कुत्ता नहीं काट सकता ॥

मधु मक्खी–दुम्बा मांस के अग्नि पर भूने जाने की गन्ध से, चुनार के पत्तों की धूनी से, गन्धक, लशुन के धुएं से भागती हैं, यदि खतमी का सुरस खुब्बाजी का सुरस और जैतून शरीर पर मर्दन करे तो मक्खी या भिड़ समीप नहीं आती।

चीता–एक घास खानिकुल्नम्र कहलाती है उस से चीता मर जाता है, यदि चरख का तैल शरीर पर मर्दन करके चीते के सन्मुख जावे तो काटने के स्थान में खिलाड़ियां करेगा।

च्यून्टे च्यून्टियां–गन्धक, हींग, पानी में घोलकर उनके छिद्रों पर बाहिर गिरा दें तो बाहिर नहीं निकलेंगी। यदि चुम्बक पाषाण उनके विल पर रख दें तो सब भाग जावेंगे, यह भी अनुभूत लटका बताते हैं कि कोई वस्तु हो मीठी खट्टी कैसी ही हो श्वास बंध करके रख दें, जब तक कोई मनुष्य उसके हाथ न लगावेगा वह वस्तु च्यूंटियों से सुरक्षित रहेगी। महुवे के बीजों का तेल निकालने के पश्चात जो खली रहती है वह बहुत उपयोगी प्रमाणित हुई है, वृक्षों के समीप दबा दें तो वृक्षों के पार्थिव कृमि मर जाते हैं। घर में जला या दबा दें तो मच्छर, खटमल, च्यूंटा इत्यादि दूर हों, भिड़ गन्धक की धूनी या लशुन की धूनी देने से अथवा मिट्टी के तैल की धूनी से भागते हैं॥

STOMACH PUMP.

(स्टामक पम्प)

जब विष भक्षण किया जावे और वह अभी आमाशय ही में हो जिसके लक्षण पीछे वर्णन हुए तो वैद्य तो वमन द्वारा निकाल देते हैं योगी गजकरनी से बाहर फेंक देते हैं परन्तु डाक्टर लोग एक यंत्र के द्वारा जिसका नाम (Stomach Pump) है निकाल देते हैं और यह युक्ति बहुत ही उपयोगी प्रमाणित होती है। सब विष निकल जाता है। स्टामक पम्प से स्टामक ट्यूब (Stomach Tube) अधिक

उत्तम है, क्योंकि आमाशय पर डाल कर जब एक हाथ से पकड़ा जाता है तो यह एक साईफन सा हो जाता है और इससे कई बार आमाशय धोया जा सकता है, चूंकि यह काम लिखने में नहीं आवेगा अतः हम इसको पूर्णतया वर्णन नहीं करते हैं ॥

GENERAL TOXICOLOGY.

(जैनरल टॉक्सी कोलोजी)

प्रथम जो मिश्रित वर्णन किया गया है, वह विशेषतः वैद्यक या युनानी से सम्बन्ध रखती हैं अब अंग्रेजी की पुस्तकों से भी लिखते हैं। विष वर्णन और विष चिकित्सा को अंग्रेजी में (Toxicology) टॉक्सी कॉलोजी कहते हैं। टाक्सी कालोजी को प्रारम्भ करने से प्रथम जो कुछ मिश्रित तौर पर डाक्टरी अंग्रेजी पुस्तकों में लिखा होता है उसका सारांश हम सी० जाई० आरमंड सिम्पल विलियम मर्रल इत्यादि की पुस्तकों से नीचे लिखते हैं ॥

विष परीक्षा

लक्षण, छेदन, भेदन, पशुओं पर अनुभव, औषधांश, पृथक्करण विधि मनुष्यों की चाल ढाल यह पांच प्रकार हैं जिनसे विष परीक्षण होता है ॥

लक्षण—सदैव अचानक ही प्रकट होते हैं रोगी इससे प्रथम अच्छे स्वास्थ्य में होता है साथ ही लक्षण प्रायः अन्न जल तथा किसी अन्य वस्तु के खाने के पश्चात होते हैं। लक्षण प्रत्येक विष के भिन्न २ हैं जो आगे वर्णित होंगे ॥

छेदन भेदन—करने से ऐसी निशानियां मिलती हैं जिनसे विष का पता लगता है। प्रत्येक विष के विशेष निशान मृत शरीर में पाए जाते हैं (इनका वर्णन भी प्रत्येक विष के वर्णन में किया जावेगा)

पशुओं पर अनुभव—विष देकर डाक्टर लोग चिन्ह देखते हैं

और उनसे अनुमान करते हैं परन्तु स्मरण रहे कि सब पशुओं की अवस्था विष भक्षण कर ऐसी ही नहीं होती जैसी कि मनुष्य की, मेंडक, बिल्ली, कुत्ता विशेषतः मनुष्य से इस विषय में तुल्य हैं ॥

ओषधि अंशों को पृथक २ करके—देखने की विधि सब से उत्तम समझी जाती है इसको अंग्रेजी में Chemical analysis (कैमिकल अनैलीसिज़) कहते हैं । जिस मनुष्य को विष भक्षण कराया गया है उसका मूत्र रुधिर आदि कोई वस्तु लेकर डाक्टर महाशय कैमेस्ट्री की रीतियों से देखते हैं कि उसमें विष विद्यमान है वा नहीं ॥

शंकित मनुष्य की—चाल ढाल जानना पोलीस का काम है यथा उसका विष क्रमण, उसका उस विष का प्रभावत्त होना, उसका विष भक्षित के अर्थ कोई पदार्थ तयार करना, उत्तम औषधि प्राप्ति से अवरोध डालना, ऐसे भाग जिनकी परीक्षा हो सकती है । गुमकरनादि वार्ता में जानने का प्रयत्न किया जाता है ॥

विषभेद और उनके लक्षण

प्रत्येक विष के लक्षण पूर्णतया तो प्रत्येक के वर्णन में कथन किया जायगा भेदानुसार लक्षण यों हैं क्योंकि विष प्रायः उनके गुणों वा कर्म्मों के अनुसार षट् विभाग में विभक्त किए गए हैं ॥

(Corrosive) **कोरोसिव**—उस विष का नाम है जो उस स्थान को नष्ट कर देवे जहां वह लगे यथा तेजाब, गंधक तथा शोरा इत्यादि खानिज तेजाब, खारी तीक्ष्ण पदार्थ, कारबोलिक एसिड, तेज एग्जालिक एसिड, टारटारिक एसिड, साइट्रिक एसिड सब कोरोसिव हैं ॥

कारोस्सिव विष भक्षण के लक्षण—मुख, कण्ठ, गले में विशेष ज्वलन, मुंह का स्वाद तीक्ष्ण, खट्टा, खारा, वमन रक्त, सम्मिलित वमन और उसमें झिल्ली के टुकड़े निगलना, कठिन तृषा, श्वासावरोध नाड़ी मद्धीन परन्तु तीक्ष्णगति ॥

मृत शरीर के छेदन भेदनान्तर के लक्षण—आभ्यन्तरीय भाग दग्ध हुआ होना, यथा तेजाब से हो जाता है। मांस पेशियों का संकुचित हुए होना अतः पश्चात् दाह होना मुख गला, आमाशय, अन्त्रयां, श्वेत, पीत, और भूरी, सुकड़ी हुई और खाई गई कभी २ कण्ठ और आमाशय की झिल्ली के कारण टुकड़ों का वमन या विष्ठा के द्वारा निकालना झिल्लियों की शोथ और आमाशय पीत भूरा वा काला गूंद की प्रकार का तरल पदार्थ वा काले रुधिर से पूरित होता है और किसी समय छिद्र युक्त हो जाता है ॥

2—IRRITANT (इरिटेण्ट)

यह वह विष है जो जिस स्थान पर लगे वहां सोजिश (दाह युक्त शोथ) करता है इनसे वमन और अतिसार आरम्भ हो जाते है बहुधा विष इसी प्रकार के होते हैं और वानस्पत्य खानिज, पाश्चिक प्रत्येक प्रकार के होते हैं। इनको दो भागों में विभक्त करते हैं प्रथम वह जो किसी अंग की सोजिश के कारण मृत्यु के कारण होते हैं द्वितीय वह जो सोजिश के अतिरिक्त अन्य बहुत से चिन्ह प्रकट करते हैं ॥

लक्षण—कण्ठ में जलन और रुकावट, अमाशय और आन्तों में पीड़ा और नरमीं अत्यन्त तृष्णा, उबकाई, वमन, अतिसार, उस के रक्त मूत्र में दाद, त्वचा शीतल, मन्द और विषम नाड़ी होती है।

पोस्टमार्टम—अर्थात् छेदन भेदन चिन्ह। सोजिश और उस के परिणाम और अमाशय की झिल्लियों का स्थूल होना और कण्ठ, वायुनलिका और परदों का तथा नसों का रक्त पूरित होना, छोटी आन्तों में बहुधा अत्यन्त सोजिस होना, झिल्ली का नरम और फूला हुवा होना।

३ विष जो मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है—यह तीन प्रकार के हैं, अफीम जैसी जो निद्रा उत्पन्न करती है, बैलाडोना जैसी

बेहोशी उत्पन्न करता है, अलकाहल जैसी जो प्रथम आनन्द और प्रसन्नता उत्पन्न करके तत्पश्चात् अचेतना और निद्रा लाती है ।

लक्षण

अफीम की श्रेणी के विषों में—शिर पीड़ा, तिमिर, धुन्ध, पुतली का सुकड़ना, कर्णनाद, भारीपन, तन्द्रा, संज्ञानाश ।

बैलाडोना की श्रेणी के लक्षण—बेहोशी, तिमिर (नेत्रों के आगे मरमाणुओं का उड़ना) चक्षुतारक फैलाव, मुखशौष्य, तृषा, और कभी २ तन्द्रादि ॥

अलकाहल की श्रेणी के लक्षण—रक्तभ्रमण और मास्तिष्क्य कार्य्य प्राबल्य तथा दो वस्तु दृष्टिगोचर पड़ना, या संपेशियों को अल्पशक्तित्व अनियमना, पश्चात् निद्रा और भयङ्कर अवस्था में संज्ञानाश ।

पोस्टमारटम अफीम की श्रेणियों में मस्तिष्क की नसों आदि का भरा हुवा होना, और हृदय के छिद्रों और झिल्लियों में रूफ का वहाव, बैलीडोना में कुछ नहीं, अलकाहल की श्रेणी में :—

सोज़िश, मस्तिष्क और झिल्लियों में रक्त ज्यादा होना, रुधिर का पतला होना ।

४ विष जो पृष्ठवंश (रीढ) पर प्रभाव डालते हैं—यथा कुचला का सत्वत्यादि इस में एक प्रकार की अचेतनता होती है, जिस से शरीर जकड़ जाता है, और शिर और पाद आगे को होते हैं, बस यही चिन्ह है ।

५ विष जो हृदय पर प्रभाव डालते हैं—यथा वत्सनाभि, तमालपत्र (तम्बाकू), अग्ज़ालिक एसिड, इत्यादि ऐसे विषों से मौत एकाकी मूर्छा, निमोनिया, हृदय की गतिबन्ध होने से होती है ।

६ विष जो फेफड़ों पर प्रभाव डालते हैं—यथा कारबोनिक

एसिड। चिकित्सा क्रम का तीन प्रकार से है, विष को वान्ति द्वारा वा स्टामकपम्प द्वारा निकालना, उसके कार्य्य को रुद्ध करना, और मृत्यु लक्षण को बदलना है।

विष को वमनकारी औषधी देकर वमन द्वारा निकाल देते हैं, वा स्टामकपम्प अथवा ट्यूब उपयुक्त करते हैं, जो उपस्थित हो वही उत्तम है, एपोमारफीन एक औषधी होती है, जिस का १० रत्ती त्वचा के भीतर प्रवेश करने से वमनारम्भ हो जाता है, और सल्फेट आफ जिंक २० ग्रेन (१० रत्ती) की मात्रा में अच्छी वान्तिकर है विकाशि विष में जब अन्य औषधियों से वमन नहीं आती तो सल्फेट आफ कापर (नीलाथोथा) ६ से १० ग्रेन की मात्रा तक प्रयुक्त करते हैं उष्ण जल में दो चमच राई के और साधारण लवण कई बार देना और किसी जानवर की पंख कण्ठ में फेरने से वमन आजाती है। स्टामकपम्प उपयुक्त करने के अर्थ प्रथम अमाशय में पानी प्रवेश करना चाहिये, वरना झिल्ली आ जावेगी, ट्यूब देख लेना उचित है कि टूटी हुई न हो, यदि स्टामकपम्प अप्राप्त हो तो रबड़ की नलि को भीतर प्रविष्ट करके साइफन बनाकर काम लिया जा सकता है। द्वितीय कार्य्य विष प्रभाव को उस का अगद देकर कम करना है। अगद अंग्रेजी विषों के बहुत ज्ञात हुये हैं, वह पिचकारी के द्वारा जल्दी दिये जाते हैं, अथवा मुख द्वारा भी पिचकारी के द्वारा देने वालों के वास्ते यदि हाई पोडर्मि कसिरिंज उपस्थित न हो तो गुदा के द्वारा चढ़ा देते हैं और वह रक्त में संयुक्त हो जाते हैं। यथा—

संखिया के विषों के वास्ते अगद हाईड्रेटेड प्राक्साईड आफ आई रन है, नाईट्रेट आफ सिलवर के वास्ते लवण है।

एमोनिया, पोटाश और सोडा के दस्ति, सिरका वा वानस्पत्य-क्षारजल पानी में डाल कर देना एग्जालिक एसिड के वास्ते अगद मैगनेशिया वा चाक अथवा दीवार की सफैदी है, प्रत्येक का अगद उसके अध्याय में वर्णित होगा।

तीसरा कार्य्य मृत्यु की परीक्षा है–विष के चिन्हों की घटाना उचित है, जोश लानेवाली औषधादि से प्रयोजन यह है कि जैसा अवसर हो वैसा करना उचित है, यथा–सर्प दंश में नोसादर को नसों में प्रविष्ट करना उपयोगी है।

युनानी पुस्तकों के मिश्रित नोट। अब कतिपय यूनानी नोट लिखे जाते हैं।

(क) जितनी औषधियां वा जितने पदार्थ चतुर्थ दरजा में–शुष्कोष्ण या शुष्क शीतल है, वह सर्व अवश्यमेव विषैले होते हैं। यह भी स्मरण रहे कि जितने पदार्थ तृतीय कक्षा में उष्ण वा शीतल होंगे। वह सब तीसरी कक्षा में ही शुष्क भी अवश्य होंगे, और जो चतुर्थ कक्षा में उष्ण अथवा शीतल होंगे, वह उसी कक्षा में शुष्क वा रुक्ष भी होंगे- और जो दूसरी कक्षा में उष्ण होंगे, वह प्रथम या द्वितीय कक्षा में रूक्ष भी होंगे, अर्थात् शीतल पदार्थ तृतीय और चतुर्थ कक्षा को और उष्ण, द्वितीय, तृतीय, और चतुर्थ कक्षास्थ रूक्ष ही होते हैं, तर नहीं होते।

जो औषधी चतुर्थ कक्षा के प्राथमिक विभाग में होगी वह साध्य है और जो माध्यमिक विभागस्थ होगी वह याप्य वा कृच्छ्र साध्य है, और जो अन्त्य विभागस्थ होंगी, वह असाध्य है:—

(ख) विष का प्रभाव दो प्रकार से होता है—

(१) शरीर में जाते ही जैसे हीरे की कणी, कांच व कूट, चाग चूर्ण या खौलता हुआ पानी कंठ से उतरते ही मारग हो जाते हैं

(२) शरीर में पहुंचने के पश्चात घुलकर निम्न लिखित प्रकार से असर करता है।

(i) शरीर में जहां लगे उसे गला देवे, जैसे कास्टिक आदि।

(ii) रक्त में सम्मिलित होकर दूर २ अपना प्रभाव पहुंचावे जैसे अहिफेन

(iii) लगने से अंग को गला ही देवे और प्रभाव दूर भी पहुंचावे। जैसा संखिया।

(ग)

(१) प्रत्येक विष रिक्तोदर पर शीघ्र और विशेष प्रभाव डालता है

(२) निद्रा में विष का अल्प प्रभाव होता है, परन्तु किसी का विशेष भीः—

(३) विष जितनी हानि घाव पर लगने से करता है, उतना खाने से नहीं करताः—

(४) यावत् विष का प्रमाद हृदय पर्य्यन्त प्रवेश नहीं करता तावत् वह मृत्यु का कारण नहीं हो सकता—

(५) जिस विष के भक्षण का स्वभाव किसी को हो, वह उस को हानिकर नहीं होता, जब तक कि प्रयुक्त मात्रा से अधिक न भक्षण किया जावे।

विष परीक्षा—

विष परीक्षा—शारीरिक आकृति और वमन से निकले हुये पदार्थ के गन्ध और वर्णादि से की जाती है—

१—उष्ण विष—अन्त्रयां और आमाशय में दाद तृषाधिक्य और ओष्ठ और जिह्वा की रूक्षतादि लक्षण हैं।

२—शीत विष—सन्धि शिथिलता, शारीरिक शीतता, ठंडा, स्वेद, अंग गुरुतादि से।

३—पार्थिव विष परीक्षा—सीना की पीड़ा, तालु और शरीर मे साथ और दाह विसंज्ञतादि चिन्ह हैं।

४-स्थावर विषों में से—(क) फल विषों की परीक्षा, मुख में शोथ, शरीर में दाह, खाने पीने से घृणादि।

(ख) **पुष्प विष परीक्षा**—आधमान, अचेतनादि होते हैं।

(३) **पत्र क्रिषी की परीक्षा**—जृम्भा, कम्प, श्वासादि लक्षण होते हैं।

(४) **छाल विषे की परीक्षा**—मुख दौर्गन्ध्य, शरीर जकड़ना, शिर पीड़ा, मुख में फेनादि से।

(५) **दुग्ध विष परीक्षा**—उरस्थल पीड़ा, मुख में कफ, अतिसार, जिह्वा जाड्यसंज्ञा नाशादि से।

(६) **विष में बुझे हुये शस्त्र की परीक्षा**—घाव तत्काल पक जावे, रुधिर अधिक निःसरण और श्यामतायुक्त दुर्गन्ध लिये हुये होवे, मांस टुकड़े २ हो जावे और भी, तृष्णातुरता, दह शोथ और अचेतनादि होते हैं।

विषावरोध विधि।

१—विष को रुधिर में प्रविष्ट होकर लीन होने से रोकने के उपाय करें।

२—यदि विष भक्षण हो गया है तो तत्काल, दस्त वा वमन द्वारा दूर करें, पश्चात् उचित औषधी, आहारादि खिलावे पिलावे।

३—यदि विष घाव पर लगा है, तो घाव को उसी क्षण जलावें, या घाव से उपरि दोनों ओर को खींच कर बन्ध लगावें, आवश्यकता हो तो घाव को वेग और शीघ्रता के साथ पानी से शुद्ध करें, तत्पश्चत् उचित औषध लगावे।

४—यदि विष सूंघा गया है, तो विष भक्षित को शीघ्र खुले वायु में ले जाना उचित है।

५—विष का उपद्रव जिस अंग में अनुभव हुआ, उसी का सुधार विशेषतः प्रयुक्त रक्खे, यथा—विषोपद्रव प्रभाव यदि यकृत पर अनुभव हुआ है, तो मूत्र प्रसावक औषधी प्रयुक्त करें, यदि आमाशय में हो तो नरम जुलाब दें। यदि यरकान (पीलिया) हो जावे तो यकृत की उष्णता को सुधार करें, भ्रम या मूर्च्छा हो तो हृदय की शक्ति बढ़ावें, यदि एंठन (अपतंत्रिक) हो तो मस्तिष्क को शक्ति दें, और नीचे के धड़ में शुन्यता हो तो प्रकृति को वर्त्ति (औषधियों की

बत्ती बना कर अथवा वर्त्ति औषधियों में लिप्त कर के गुदा योनि आदि में रखना) और वस्ति कर्म से नरम करें आदि, आदि ।

६—तेजाबों (खटाइयों) को खारी औषधियों से और क्षार को खटाई से साम्यावस्था लावें ।

७—प्राकृतिक प्रबन्ध करें, यथा—शीशा के टुकड़े भक्षण किये हो तो रूक्ष भोजन अधिक तर खिलावें ।

८—उष्ण विषों पर हृदय शीतल औषधि और शीत विषों पर उष्ण औषधि खिलावें पिलावें—और तरल सुगंधियां सुंघावें—हृदय और कलेजे के समीप और पीड़ा स्थान पर उचित औषधियों का लेप करें ।

९—यदि प्रकृति में गुरु रूक्षता वा शुष्कता हो—जैसे कि पेट फूलना, अन्त्र पीड़ा, मल मूत्रावरोध, मुखशोष और दिक्कादि तो तीक्ष्ण रेचक का वस्ति कर्म करें । और यदि रोगी में पानशक्ति हो तो जुल्लाब की औषधि पिलावें । और फिर विषहर औषधियां दें ।

१०—यदि दस्त अधिक आते हों और आम (मरोड़) हो तो दस्त और मरोड़े की चिकित्सा करें । और काबिज फलों का अर्क भी पिलावें ।

११—यदि शक्ति हीनता हो गई हो, अचेतना और मूर्च्छा और पुतली फिर गई हो तो आमाशय को अधिक बल से मर्दन करें, मुख में वायु फेंके, मूर्च्छोपचार करें ।

नोट—यदि विषभक्षित को मूर्च्छा हो, नेत्र लाल हों, और, अकड़ जावें, नेत्र श्यामता नष्ट हो जावे, जिह्वा वहिःनिर्गत हो जावे, नाड़ी बन्ध हो जावे, वा विपरीत हो जावे, शीतल स्वेद निकलें तो मृत्यु का भय है उपाय अल्पोपयोगी होगा ।

विषोपद्रव निवारणार्थ सामान्योपायाः—मोठ की जड़ और कसौंजी (कुसौंधी) की जड़ सम तोल पानी में घोट कर कई बार पिलावें—वमन होकर विष निकल जावेगा । प्रत्येक प्रकार के विष के अर्थ अति उपयोगी है ।

केवल कसौंधी के बीज ३ मासा घोट कर पिलाना ६ प्रकार के विष को अनुभूत है कसौंधी के बीज ≈) तोला की दर से मिल सकते है।

२—दरयाई नारि फेल १ मासा पानी में विसकर पिलावें, जब तक वमन हो बार बार थोड़ा थोड़ा पिलाते रहें, यहां तक कि वमन करना बन्ध हो जावे।

३—कमलगट्टा १ मासा, तूतिया २ रती, साथ पीस कर उष्ण जल से पिलावें, कि विष को वमन के द्वारा निकालता है।

४—ईषदोष्ण जल से वमन करावें, और कई बार घृत और दुग्ध पान करावें, यदि ओष्ण जल से वान्ति न हो तो उस में सोवा के बीज, मूली के बीज, मैनफल, लवण या बूरा भी युक्त करलें।

५—ओष्ण जल और तिलों का तैल, और गुलाब का तैल से वमन करावे, और पश्चात् गोघृत और दुग्धपा न करावें।

६—दुग्ध और घृत से वमन करावें, अर्द्ध प्रस्थ (आधसेर) दुग्ध में, एक तोला घृत पका कर पिला जावे।

७—सुहागा भूना हुआ गोघृत में मिला कर बार बार खिलाते रहें, विष भाक्षित और काटे के लिये उपयोगी है।

८—गोघृत दो अढाई तोला में—लाहोरी लवण ६—७ माशा मिला कर खिलावें, सर्प दंशित को भी उपयोगी है।

९—काकड़े (विनोले) की गुली को कूट कर और गाय के दुग्ध में उबाल कर पिलावें।

१०—चौलाई की जड़ ताजा १ तोला (शुष्क हो तो ६ मासे) पानी में पीस कर गो घृत के साथ खिलावें, उष्ण विष के सब प्रकारों को उपयोगी है।

११—पतला मट्ठा, थोड़ा सूंठ डाल कर पान करावें।

१२—चौलाई की जड़ चावलों के पानी में पीस कर पिलावें।

१३— छोटी कटेली पीस कर पिलावें।

१४—देशी अजवायन खिलावें तो बहुत विषों को लाभ करता है।

१५—कतीरा खिलावें, पिलावें, बहुत विषों का निवारक है।

१६— हुलहुल के बीज तोला सवा तोला, पीस कर खिलावें।

१७—निरबिसी पानी में विसकर पानी से पिला दें।

१८—फादजहर खिलावें पिलायें, जिसका वर्णन पीछे दिया।

१९—सांठी के चावल, कोदो, सैन्धा लवण खिलावें, खटाई और लाल मिर्च से पथ्य रक्खें।

२०—लीमू के बीज गुलाब में विसकर पिलावें।

२१—चन्दन, कपूर और काहू तथा गुलाबरोगन और गुलाब आमाशय और कलेजे पर लेप करें।

२२—उष्ण विषों के वास्ते शीतल जल की शिर पर धारा लगावें, और इस्पगोल का लुआब, गाय का ताजा दुग्ध, गो-दुग्ध की छाछ और बादाम का तैल, चन्दन, गुलाब, तरबूजादि इन में से जो कुछ प्राप्त हो सके बरफ से ठंडा कर के पिलावें, हृदय और कलेजे के समीप गुलरोगन व नरगिस रोगन का लेप करें, वस्त्र गुलाब और चन्दन में तर कर के उरु स्थल पर रक्खें, और पीड़ा स्थान पर, चन्दन, कर्पूर, काहू, खीरा बीज में से किसी का लेप करें।

२३—शीत विषों के लिये विषभाक्षित को मुहुर्मुहु वमन करा कर पाषाणभेद, निरबिसी आदि उष्ण द्रव्य औषधी खिलावें, पिलावें, किस्तूरी आदि उष्ण नस्य सुंघावें।

२४—बत्सनाभि आदि शोधिन विषों के लिये वमन करावें और बकरी का दुग्ध पिलाते जावें, जब वह दुग्ध जीर्ण होकर वमन न आवे तब जाने कि विष निवृति हो गई।

२५—प्रत्येक नशा (मद) के उतार के वास्ते शीतल जल की धारा शिर पर डालें, और पतला मट्ठा थोड़ी सूंठ मिलाकर पिलावें, हाड़ी के पुष्प पका कर पिलावें, यदि अफारा आगया हो और नाड़ी खिचने लगी हो तो भी इस से शान्ति होगी—

विशेष दूसरे भाग में लिखा जावेगा।

——:-०-:——

निम्नलिखित आप मुफ्त ले सकते हैं ॥

" अमृत "

इस पुस्तक में जगत्प्रसिद्ध ओषधि "अमृतधारा" का विस्तृत वर्णन है। यह औषधि अब सब जगह नाम प्राप्त कर चुकी है। कोई बीमारी हो जावे, कोई भी चोट या घाव लग जाय, कोई भिड़ सांप, बिच्छू इत्यादि काट जाय इसको खाने या लगाने से तत्काल आराम हो जाता है। घण्टों के रोग मिन्टों में दूर होते हैं। २५ हज़ार लोगों की राय है कि कोई घर इससे खाली नहीं होना चाहिए। मूल्य पूरी शीशी २॥) नमूना ॥)। इस पुस्तक में बहुत से चमत्कार इस औषधि के दिए हैं, जो मुफ्त भेजी जाती है॥

ओषधियों का सूचीपत्र

अमृतधारा के अतिरिक्त लगभग पांचसौ औषधियां भिन्न २ रोगों की औषधालय में हर समय तैयार रहती हैं। सब औषधियां श्री पण्डितजी अपनी निगरानी में तैयार कराते हैं। उनके गुणों के भरोसे पर नमूने भी दिए जाते हैं। इन औषधियों का सूचीपत्र भी मुफ्त मिल सकता है॥ औषधियों की सूची आगे दी गई है।

पुरुषों के गुप्त रोग

पुरुषों के गुप्त रोगों के कारण, चिन्ह तथा चिकित्सा इत्यादि इस पुस्तक में अंकित हैं। एक बार आरम्भ करके बिना समाप्त किय छोड़ना कठिन है। यह पुस्तक विद्यार्थियों को नहीं भेजी जाती॥

देशोपकारक व वैद्यामृत

यह दो वैद्यक पत्र श्रीमान पण्डितजी के सम्पादकत्त्व में निकलते हैं। जिनको अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने और वक्त पर स्वयं इलाज करने का खयाल है वे इनको देखेते ही ग्राहक हो जाते हैं। देशोपकारक पाक्षिक का मूल्य २।) है और वैद्यामृत मासिक का मूल्य ॥) है। नमूना मुफ्त

पत्र व्यवहार द्वारा चिकित्सा

कविविनोद वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य आविष्कर्त्ता "अमृतधारा" की चिकित्सा करने की योग्यता आजकल इतनी बढ़ी चढ़ी है कि हज़ारों रोगी पत्र व्यवहार द्वारा इनसे हमेशा चिकित्सा कराते रहते हैं। चिकित्सा कराने के विस्तृत नियम इस रिसाला में अंकित हैं। पहले पत्र के साथ १) पत्र पढ़ने की फीस आनी चाहिए, तब दवाई तजवीज की जाती है। फिर इलाज चाहे कितने समय तक जारी रहे और फीस नहीं ली जाती। यह रिसाला भी मुफ्त मिल सकता है ॥

मैनेजर अमृतधारा औषधालय, अमृतधारा डाकखाना, लाहौर

अमृतधारा तथा देशोपकारक औषधालय
की
किञ्चित आवश्यक औषधियों के नाम संक्षिप्त गुण और मूल्य ॥

अमृतधारा

इसकी प्रशंसा पृथक् "अमृत" नामक पुस्तक में अंकित है। और यह इतनी प्रसिद्ध है, कि सब जानते हैं कि अमृतधारा न केवल लगभग सर्व मानुषी रोगों की जो साधारणतः घरों में बूढ़ों, बच्चों, जवानों, पुरुषों और स्त्रियों को होते रहते हैं अचूक इलाज है, प्रत्युत पशु पक्षी आदि के रोगों को भी दूर करती है, विचित्र प्रभाव इसमें ईश्वर ने भर रक्खा है। रोग नाम की शत्रु है। जहां रोग हो वहां ही जा पहुंचती है। वर्षों के रोग महीनों में, महीनों के दिनों में, दिनों के घण्टों में दूर करती है, मार्ग वा यात्रा में, हर घर में, हर जेब में हर ऋतु में, हर देश मे इसको अपने पास रखकर रोगों के भय से निर्भय हो सकते हैं ॥

सब प्रकार का शिर दर्द, कफज खांसी, शुष्क खांसी, पार्श्व-शूल (नमोनिया) नज़ला, जुकाम, विषूचिका, मन्दाग्नि, अरुचि, गुड़गुड़ाहट, मरोड़, परिणाम शूल, (दर्द कौलंज) अतिसार, वमन, मृगी, दन्तपीड़ा, वा दाढ़ पीडा, दांतों से रक्त जाना, व पानी लगना, कर्णपीडा, कर्णघाव, कर्णखाज, कर्णशोथ, कर्णकृमि, नासिकार्श, नाक में फुन्सियां, नासिका में दुर्गन्ध, नकसीर, छींक, नेत्रपीड़ा, फोड़ा, फुन्सी, सब प्रकार के घाव, कान का पकना, रान का लासना, दाद, चम्बल, गला बैठना, मुखशोथ, भिड़ का डंक, बिच्छू का डंक, सर्प का डंक, बावले कुत्ते का विष गले में दर्द, गले पड़ना, सर्व प्रकार के ज्वर, मूत्रकृच्छ, उपदंश, गिलटियां, बद्ध, सन्धिवात, सर्व प्रकार का शोथ, आन्तरिक व बाह्य पीड़ायें, चोट से दर्द, बवासीर, मस्तिष्क की निर्बलता, प्लेग, रक्तवमन, राजयक्ष्मा, प्रसूत, हृदय रोग, कामला, बायगोला, आर्तव सम्बन्धी सर्व रोग, कण्ठमाला, (हजीरां) स्त्रियों को

शिर दर्द, गुद भ्रंश, डब्बा रोग, बच्चा का दूध न पीना, सन्निपात, शिर झूमना, सन्यास, कम्प रोग, लकवा, अर्द्धाङ्गबात; शिर की खाज, जिह्वाशोथ, मुख में फुन्सियां, मुख का पकना, ओष्ठशोथ, ओष्ठफुन्सी, स्वरभङ्ग, रक्त थूकना, पीव थूकना, छाती का शोथ, फुफ्फुस शोथ, स्तन शोथ, स्तन फोड़ा, आमबात, मतली, यकृत पीड़ा, यकृतबात, जलोदर, कठोदर, पांडुरोग, आमातिसार; प्लीहोदर, बृद्धोदर, उदरकृमि, रक्तगन्दर, बृकद्वय पीड़ा, बृकद्वय शोथ, मूत्राशय पीडा, मूत्राशय शोथ, अण्डवृद्धि, उदररोग, गर्भाशय का शोथ, गर्भाशय की पीड़ा, योनिस्राव, कटिपीड़ा, रींघनवाय, घुटने का दर्द, पिण्डुली का फूलना, नितम्ब पीडा, पित्त सर्व प्रकार के रोग, नासूर, सर्व प्रकार की खाज, छपाकी, गुली अर्थात् ओष्ठ का सूजना, बहुस्वेद, अग्नि से जलना इत्यादि२ दूर होते हैं ॥

मूल्य २।।) फी शीशी दवाई४ ड्राम। नमूना की शीशी ।।), बूंद गिराने वाली शीशी जिससे जितने बूंद चाहो डाले जावें, ४ ड्राम का मूल्य २।।।),

अमृतधारा की मीठी टिकियां—बच्चे भी खुशी से खाते हैं मूल्य १०० टिकिया ।)

आबेहयात

"अमृतधारा" की नकल है। प्रायः विज्ञापन बाजों ने नकल आरम्भ कर दी है और लोग अल्प मूल्य देकर मंगवाते हैं, इसलिए वह नकल बनाकर रक्खी है जो इन नक्कालों से फिर भी अच्छी होगी। और असल व नकल का फर्क भी दिखा देगी। मूल्य फी शीशी ।।।) नमूना की छोटी शीशी ।)

पुरुषों के विशेष रोगों की औषधियां

अधिक देखना हो तो नपुंसकत्व पुस्तक मंगवावें ॥

अकसीर नं०१ महत्वाजीकरण औषधि—बहुत वीर्यवर्द्धक उत्तेजक औषधियों का संग्रह है। नपुंसकता की सम्पूर्ण अवस्थाओं

में हितकर है, यह पुरुषों के गुप्त रोगों के वास्ते जनरल औषधि है। नपुंसकता के अतिरिक्त वातज रोग, कफज रोग, खांसी, नजला, जुकाम, कटिपीड़ा, सन्धिवात, को हितकर है। शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, को बहुत लाभदायक है। प्रभाव किञ्चित उष्ण है। मूल्य ६४ गोली ४) ३२ गोली २) नमूना ८ गोली ॥), मात्रा १-१ गोली सायम् प्रातः ॥

अक्सीर नं० २ लक्ष्मीबिलास रस—वैद्यक में लिखा है, कि यह रस नारदजी ने श्रीकृष्ण महाराज को बताया था, दूध के साथ नित्य खावे तो बूढ़ा भी युवा के तुल्य होवे। कामदेव के समान हो जावे, सन्निपात, प्रमेह, भगन्दर, कण्ठ शोथ, संग्रहणी मरोड़, खांसी, जुकाम, बवासीर, सन्धिवात, कटिपीडा, नेत्रपीडा दृष्टमान्द्य, घ्राणदुर्गन्ध, गलगण्ड, शिरपीड़ा, प्रदरादि को हितकर है। ज्वर या अन्य रोग के पश्चात् जो निर्बलता, नपुंसकता, प्रमेहादि होता है उसको विशेषरूप से हितकर है। शुक्रमेह, स्वप्नदोष शीघ्रपतन को लाभदायक है। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २) नमूना ८ गोली ॥).

अकसीर नं०८ पौष्टिक कसैली—पुष्टिदायक है, कफज वातज रोगों को दूर करती है। रक्त नया पैदा करके शरीर को फुरतीला बनाती है, और गरमी को उत्पन्न करती है, चेहरा को लाल करती है कुछ दिन सेवन करने से अत्यन्त बल पैदा करती है, मात्रा आधी रत्ती से दो रत्ती तक है। मक्खन या मलाई में रख कर खाया करें, मूल्य १ तोला १६) है, ६ माशा ८), ३ माशा ४), नमूना १॥ माशा २) है ॥

अकसीर नं० १०—बलबर्द्धक है प्रत्येक जाड़े में एक मास खा छोड़ने से कभी बल कम न होगा। नामर्द भी मर्द हो जाते हैं बूढ़ों को युवा बनाती है। मात्रा १-१ गोली, सायम प्रातः मूल्य जिसमें कस्तूरी पड़ी हुई है ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥) जिसमें कस्तूरी नहीं पड़ी परन्तु धातु पौष्टिक शेष सब औषधियां वही हैं ६४ गोली २), ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

अकसीर नं० ११—हृदय, मस्तिष्क, यकृत, आमाशय, मूत्राशय को पुष्टिकारक है, आनन्द वर्द्धक है, शीघ्रपतन स्वप्नदोष

को हितकर है, याकूती का काम भी देती है, ताऊन के दिनों में खाने से मानसिक वल स्थिर रहता है, और बडा गुण करती है उत्तेजक है, अमीरों के खाने योग्य है, प्रत्येक प्रकृति के अनुकूल आती है इसका प्रधानांश स्वर्ण है; मूल्य ६४ गोली १०), १६ गोली २॥), नमूना ४ गोली ॥=)

अकसीर नं० १२ महत् बाजीकरण—विशेषतया शीघ्रपतन के रोगियों के वास्ते है। तीसरे पहर एक दो गोली दूध से खाने से स्तम्भक है, नित्य सायम प्रातः एक गोली खाने से शीघ्रपतन दूर होता है, इसके खानेवालों को खांसी, नजला, जुकाम कटिपीडा, वातज, कफज आदि रोग नहीं सताते। मूल्य ६० गोली ३), २० गोली १), नमूना ५ गोली।)

अकसीर नं० १४—उत्तेजना समय लेस जारी होने को रोकता है, शीघ्रपतन को दूर करता है। वंद कुशाद की विशेष औषधि है, मूल्य ३० तोला ३) अर्द्ध १॥) मात्रा ९ माशा॥

अकसीर नं० २० मन्मथरस—बूढों को जवान और पहलवान बनाने के वास्ते यह, योग शिवजी महाराज का निर्माणकृत है, उत्तमता यह है कि तीव्र नहीं है। चिरस्थाई लाभ धीरे२ करता है। सदैव खाने में कोई हानि नहीं है। शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्र-मेह, को दूर करता है, उत्तेजक है। वम्बई से एक ७० वर्ष के वृद्ध २२ बच्चों के पिता ने मुझे लिखा था कि युवावस्था के प्रारम्भ से प्रत्येक जाड़े में २ सप्ताह सेवन करता है और वह अब तक भी पूरी शक्ति रखता है, सन्तानोत्पत्ति के योग्य है। खांसी, नजला, जुकाम, पाण्डु, कामला, अपाचन को हितकर है। शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है। पौष्टिक उत्तेजक व स्तम्भक है। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं० २३ दूध घृत पाचक—इसे एक रत्ती तक प्रकृति अनुकूल नित्य खाने से दूध घृत पचाने की शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है। सेरों तक नौबत पहुंचती है, १४ दिन के भीतर सेरों दूध पचने लगता है। ७० दिन के सेवन से सम्पूर्ण कफज व वातज रोगों को दूर करता है, घी दूध पचने की शक्ति

सदा के लिए बढ़ा देती है। मूल्य ५) रुपये तोला, नमूना ३ माशा १।)

अकसीर नं० २४—स्तम्भक है, शीघ्रपतन रोगी को जब तक रोग दूर न हो कभी२ आवश्यकता पड़ती है। तीसरे पहर दूध के साथ खावे पश्चात कोई खट्टी लवणयुक्त वस्तु न खावें, चौगुना प्रभाव होता है। मूल्य ३२ गोली २), नमूना ४ गोली।)

असकीर नं० २७ (अब निर्बल न होंगे)........के पश्चात् एक दो गोलियां खा लीजिए, उदासी दूर, सुस्ती चकना चूर, बल ज्यों का त्यों, तीसरे पहर खावें तो स्तम्भन हो। नित्य दूध के साथ सायम् प्रातः खावें तो शुक्रमेह शीघ्रपतन को हितकर है, मूल्य ६० गोली १) नमूना =)

अकसीर नं० २७(ख)—जिसमें कस्तूरी आदि मिलाए हैं, मूल्य ६४ गोली ४) नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं० ३० धातुवर्द्धक—इससे वीर्य्य वहुत बढ़ता है। और उसके पश्चात् पुंसत्व बढ़ना आरम्भ होता है। शुक्रमेह स्वप्नदोष और शीघ्रपतन को भी हितकर है, मात्रा ६ माशा दूध के साथ मूल्य २) पाव, नमूना पांच तोला ॥)

अकसीर नं० ३१ चन्द्रप्रभाबटि—यह एक वैद्यक योग है; जो विविध नामों से बड़े २ वैद्य बेच रहे हैं, यह मूत्र के साथ शुक्र आदि जाने को रोकती है, २० प्रकार के प्रमेह, पथरी, अफारा, शूल मन्दाग्नि, अण्डवृद्धि, पांडु, कामला, बवासीर, भगन्दर, नासूर कटिपीड़ा, कास, श्वास, हिक्का, डकार, नजलादि को हितकर है। वीर्य्य को सन्तोनोत्पत्ति के योग्य बनाती है। मात्रा दो गोली सायम् प्रातः मूल्य ३२ गोली १) नमूना, ८ गोली।)

अकसीर नं० ३३ आयुर्वेदिक टानिक—रज वीर्य को शुद्ध करके सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाती है। जब कोई विशेष कारण प्रतिबन्धक स्पष्ट न हो, तो स्त्री पुरुष दोनों को गाय के दूध के साथ खिलाना आरम्भ करें, एक दो मास खावें, और प्रत्येक रजोधर्म के पश्चात् सम्भोग करें, तो ईश्वर कामना पूरी करे। यह गोलियां उत्तेजक, शुक्रमेह, स्वप्न-दोष, शीघ्रपतन नाशक, शुद्ध रक्तोत्पादक, बलवर्द्धक, सन्धिवात नाशक है, और कटिपीडा, गुल्फपीड़ा, पार्श्वशूल, रानपीड़ा' रींघन-

वायादि सर्व वातज कफज रोग, प्रमेह, कामला, रक्तक्षीणता, शोथरोग, जलोदर, कठोदर, मूसा विष, स्त्रियों के मासिक रज की कमी व अधिकता, अण्डवृद्धि, को हितकर है। मधु व पानी के साथ स्थूलता को दूर करती है। अंग्रेजी टानिक औषधियों से इसका मुकाबला करो अव्वल दर्जे रहेगी। मात्रा १ गोली सायम प्रातः प्रकृति अनुकूल न्यूनाधिक कर सकते हैं। मूल्य ६४ गोली ४), ३२ गोली २), नमूना ८ गोली ॥)

अकसीर नं० ३४ (क) शुक्रमेह—(धातु जाने) के वास्ते यह अद्वितीय औषधि है। स्वप्नदोष को बहुत शीघ्र दूर करती है, शीघ्रपतन को भी हितकर है। वीर्य्य को गाढ़ा करने में अनुपम है, प्राकृत स्तम्भन को बढ़ाती है, मात्रा १ गोली सायम प्रातः मूल्य ३२ गोली २), नमूना, ८ गोली ॥)

अकसीर नं० ३४ (ख)—उपयुक्त औषधि के भीतर केशर, कस्तूरी, अम्बर, मोती, शिलाजीत, स्वर्ण, चांदी, अभ्रकादि भस्म और संयुक्त की जाती हैं, तो यह उपर्युक्त लिखित गुणों के अतिरिक्त हृदय मस्तिष्क, मूत्राशय, यकृत, आमाशय को बल देती है। अमीरों के खाने योग्य है। मूल्य ३२ गोली ५), १६ गोली २॥), नमूना ८ गोली १।)

अकसीर नं० ३९—शुक्र जनक है, शीघ्रपतन व वीर्य्यस्राव को दूर करती है। वीर्य्य को खूब बढाती है, और गाढ़ा करती है। शारीरिक बल को अधिक करती है। शीघ्रपतन के लिए विशेष रूप से हितकर है। शुक्रमेह को भी दूर करती है। लेसदार औषधि होने पर भी काबिज नहीं है। इसके खाने से प्राकृत स्तम्भन बढ़ता है। मूल्य फी पाव २), आधा पाव १), नमूना एक छटांक ॥)

अकसीर नं० ४० स्वप्नदोष नाशक—यह औषधि विशेष कर गृहस्थों के वास्ते है। शुक्रमेह व शीघ्रपतन नाशक है, स्तम्भक भी है। मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

अकसीर नं० ४१ कामनी वशीकरण—जो लोग कहते हैं, कि स्तम्भन की कोई औषधि उनको गुण नहीं करती इसको सेवन करें, ६ गुणा बन्धेज होता है। यदि दैनिक यह गोलियां खाई जावें

तो शीघ्रपतन दूर होकर सदैव स्तम्भन उत्पन्न होता है। शुक्रमेह, स्वप्नदोष का मूलोच्छेद होता है, पट्ठों को पुष्ट और दृढ करती है। कस्तूरी, सोना, चांदी, केशरादि इसके प्रधान अंश हैं। मूल्य ३० गोली २५), ६ गोली ५), १ गोली १)

अकसीर नं० ४३ अपूर्व स्तम्भक—सैकड़ों औषधियों के आजमाने के पश्चात् इसको निकाली है, यह नं० ४१ से भी इस काम में बढ कर है, मूल्य वही है १ गोली १), ३० गोली २५), ६ गोली ५),

अकसीर नं० ४४ (फ़लकसैर)—इसके गुण नाम से ही प्रकट है। इसके खाने से मन में प्रसन्नता उत्पन्न होती है, आनन्द वर्द्धक है, हृदय मस्तिष्क को पुष्टि देती है, शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष का नाश होता है। यदि तीसरे पहर को २—३ माशा खा लेवे तो विचित्रानन्द आता है। स्तम्भक और सुखदायक है, मूल्य ५ तोला २), नमूना १ तोला ॥), कस्तूरी, अम्बर, याकूत, जमुर्रद, मोती, सोना, चांदी, केशर आदि से तैयार होती है ॥

अकसीर नं० ४७ शीत—यह औषधि उन लोगों के वास्ते है जिनकी प्रकृति बहुत उष्ण है, या मूत्राशय के भीतर इतनी गरमी है कि थोड़ी ऊष्ण रुक्ष औषधि रोग को दूर करने के स्थान में बढ़ाती हैं। प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष और बकाया सोजाक को गुणकारी है, इस से स्वभाव प्रकृतावस्था पर आने शुक्रमेहादि दूर होने के पश्चात् और पौष्टिक औषधि दी जा सकती है मूल्य ॥) तोला, ६ माशा।)

अकसीर नं० ५०—अमीरों के वास्ते तोहफा, प्रत्यके वीर्य्य रोग का अचूक इलाज, तुरन्त गुणकारी, प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्न-दोष के वास्ते अद्वितीय और वाजीकरण के लिये रसायन है पहिले दिन ही ताकत, मूल्य २ गोली १)

अकसीर नं० ५२ बसन्त कुसुमाकर रस—यह शार्ङ्गधर का उत्तम योग है, बहु मूत्र और सर्व प्रकार के प्रमेह को शरतिया दूर करता है, मूल्य ६० गोली २०) है, नमूना ६ गोली २) है ॥

अकसीर नं० ५५ स्वप्न दोष नाशक चूर्ण—यह विशेषतया विद्यार्थियों के वास्ते है स्वप्न दोष व प्रमेह को दूर करता है दिमाग रोशन करता है, स्मरण शक्ति को बहुत ही तेज करता है, मात्रा

३ माशा प्रातः ३ माशा सायम दूध के साथ, मूल्य २) प्रति पाव नमूना १ छटांक ॥)

अकसीर नं० ५६—यह वीर्य्य को गाढा करने तथा शीघ्र पतन को दूर करने में अद्वितीय माना गया है। तीसरे प्रहर को खावें, तो उसी दिन इसका प्रभाव हो। मूल्य एक पाव का ४) आध पाव २) नमूना ॥)

अकसीर नं० ६१—यह शीघ्रपतन की विलक्षण औषधि है यह मस्तिष्क आदि के लिये पौष्टिक है । ३ माशा तीसरे प्रहर को खाने से स्तम्भन होता है, इसमें अफीम आदि कोई मादक वस्तु नहीं पड़ी है । मूल्य ६ तोला ४) नमूना १॥ तोला १)

अकसीर नं० ६२—अत्यन्त बलदायक है और वीर्य्य पुष्टि करता है एक दिन खाने से ही कई दिन पुष्टि रहती है । बूढों के वास्ते अमृत है मूल्य ८ गोली २)

अकसीर नं० ६५—अति बाजीकरण है ४० दिन पश्चात् हालत असह्य होजाती है मूल्य ४) शीशी १ ड्राम

भस्में ।

अकसीर नं० १८ शिङ्गरफ भस्म—बाजीकरण के लिये अनुपम मानी गई है, पट्ठों को असाधारण बल प्रदान करती है, नंपुसकता दूर करने की बलवान औषधि है, बूढों की लाठी है, वातज व कफज रोग यथा, अर्द्धगवात; आर्दितवात सन्धिवात, शून्यवात, कफज खांसी, मन्दाग्नि आदि को रामबाण है, शुद्ध रक्तोत्पन्न कर के चेहरे को लाल करती है । मूल्य १ तोला १०) नमूना १ माशा १) शीत ऋतु में अवश्य सेवन करें, दर्जा खास १००) तोला है ॥

अकसीर नं० १९, बंगभस्म दर्जा अव्वल—यह सवा सौ पुट से पहिले शुद्ध की जाती है, फिर भस्म की जाती है, चांदी भस्म भी इसके सामने कुछ नहीं है। प्रमेह, मूत्रकृच्छ, सोजाक, कुरेह को हितकर है उत्तेजक है 'मर्द को वंग और घोडे को तंग' की उक्ति इसी पर ठीक है। मूल्य १ तोला १०),६ माशा ५),

बंगभस्म सामान्य—कलई को साधारण रूप से शुद्ध करके बनाया जाता है, गुण लगभग वही है जो ऊपर वर्णन किए गए हैं,

प्रभाव किञ्चित देर से होता है, मूल्य १ तोला २), ३ माशा ॥) मात्रा ३ रत्ती ॥

अकसीर नं० २५ त्रिधातु भस्म—यह कलई सीसा, जस्त की मिश्रित अत्युत्तम स्वर्ण रंग की भस्म है, जो प्रदर, सोम शुक्रमेह, को दूर करने, वीर्य्य को गाढा करके प्रकृत बन्धेज उत्पन्न करने में विचित्र औषधि है। मूल्य १ तोला ४), ६ माशा २), नमूना १॥ माशा ॥)

अकसीर नं० २६ स्वर्णभस्म अव्वल दर्जा—पट्ठों को पुष्टि देती है, हृदय मस्तिष्क, यकृत्, वृकद्वय, मूत्राशय, जननेन्द्रिय, सब को बल प्रदान करती है। वीर्य्य बर्द्धक और उत्तेजक है घृत, दूध, पाचनकारी है। तीन माशा भी यदि एक बार खालो तो वर्षों की गई शक्ति पुनः आ जाय। शुक्रमेह शीघ्रपतन, स्वप्नदोष प्रमेह, धातु क्षीणता, नपुंसकता, स्मरणशक्ति तथा हृदय की निर्बलता, सब दूर हों। मूल्य १ तोला ८०) ३ माशा २०), नमूना ४ रत्ती ४)

स्वर्ण भस्म दर्जा दोयम—गुण वही हैं किंचित देर में प्रभाव होता है। सस्ती है, मूल्य १ तोला ४०), ६ माशा २०), १॥ माशा ५), ४ रत्ती २)

मूंगा भस्म—पित्त प्रकृति वाले धातु विकार में ग्रस्तों को दी जाती है, सस्ती किन्तु बडी उत्तम औषधि है। पुरानी सिर पीड़ा मस्तिष्क की निर्बलता, नजला, प्रतिश्याम, रक्त वमन, रक्तपित्त, को हितकर है। वीर्य्य को मूत्राशय की गरमी को दूर करती है। मूल्य १ तोला ॥), ६ माशा ।), दर्जा अव्वल १) तोला है ॥

संखिया भस्म (दर्जा खास)—यह भस्म विशेष रूप से वीर्य्य बल और उत्तेजना के लिये तैयार की गई है । १४ दिन के भीतर पर्य्याप्त बल आता है। और ४० दिन के भीतर तो रुकना कठिन होता है, इसके अतिरिक्त संपूर्ण वातज कफज रोगों को रामबाण है, बूढों की सहायक है, उनको युवा बनाती है। मूल्य ३ माशा १२) १ माशा ४), नमूना २ रत्ती १), मात्रा खसखास से १ चावल तक ॥

संखिया भस्म—वातज सन्धिवात, आर्दितवात, अर्द्धाङ्गवात कफज कास, कटिपड़ादि को हितकर है, उत्तेजक है । मूल्य १ तोला ५) ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥=)

चांदी भस्म—धातुक्षीणता, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, हृदय, मस्तिक, आमाशय की निर्बलता, नपुंसकता को हितकर है। प्रमेह हृदय की धड़कन को भी हितकर है। मूल्य १ तोला ८), ३ माशा २) नमूना १॥ माशा १)

फ़ौलाद भस्म शिंगरफ़ी—यह भस्म फौलाद की शिंगरफ के द्वारा की जाती है। धातु रोग यथा शीघ्रपतन, वीर्य्यस्राव, शुक्रमेह को दूर करके उत्तेजना को बढ़ाती है, शुद्ध रक्तोत्पन्न करती है। यकृत् को बल देती है, रंग की श्वेतता को दूर करती है, मूल्य १ तोला १॥) ३ माशा ।=)

फौलाद भस्म दर्जा खास—बड़ी वाजीकरण है शुद्ध रक्तोत्पन्न करके चेहरे को लाल करती है, नामर्द को मर्द बनाती है। मूल्य २०) तोला है। दर्जा खासुलखास १००) तोला।

फौलाद भस्म (दर्जा अव्वल)—यह असली फौलाद की भस्म भी कई मासों में तैयार होती है। बड़ी वाजीकरण है, शुद्ध रक्तोत्पन्न करके चेहरे को थोड़े ही दिनों में लाल करती है, पट्ठों को बल देती है, वीर्य्य सम्बन्धी रोगों को दूर करके नए सिरे से मर्द बनाती है, मूल्य १ तोला ५), ६ माशा २॥), १॥ माशा ॥=)

फौलाद भस्म—धातु क्षीणता, नाताक़ती, शीघ्रपतनादि को हितकर है, यकृत् को बलदायक है, रंग को लाल करती है। मूल्य १ तोला २॥), ३ माशा ॥=)

लोह भस्म—यह उत्तम लोहे से सामान्य रूप से तैयार की जाती है। साधारण अवस्थाओं में बरती जाती है, मूल्य ।॥) तोला ३ माशा ≡)

सीसा भस्म दर्जा अव्वल—यह पीत रंग की सीसा भस्म अत्युत्तम है, वाजीकरण है, वीर्य्य के सर्व रोगों को हितकर है, मूत्रकृच्छ और सोजाक, कुरेह को भी हितकर है। उचित अनुपान से सर्व रोगों में दी जाती है। कफज रोग, खांसी, संग्रहणी, बवासीर, को दूर करती है। कामदेव की वृद्धि करती है। मूल्य १ तोला १०) ३ माशा २॥), १ माशा १)

सीसा भस्म—मूत्रकृच्छ के वास्ते हितकर है। कुरेह को भी गुणकारी है। मूल्य १ तोला १॥), ३ माशा ।=)

अनविध मोती (मरवारीद नासुफ़ता) भस्म—हृदय, यकृत, मस्तिष्क को बलदायक शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि निवारक है। मूल्य ३०) रु० तोला। ३ माशा ७॥), २ रत्ती १।)

रस सिन्धूर—यह वैद्यक की प्रसिद्ध औषधि है। यह रसायन है, उत्तेजक है, इसकी वैद्यक ग्रन्थों में बड़ी प्रशंसा लिखी है, बभुक्षित पारा से तैयार कृत का मूल्य २०) तोला है, और शुद्ध पारद से तैयार कृत का मूल्य १०) तोला शिंगरफ से निकाला हुआ पारा से तैयार कृत ५) तोला है॥

चन्द्रोदय—यह एक प्रकार का रस सिन्धूर सोना मिश्रित होता है, सर्व औषधियों का राजा है, न केवल धातु सम्बन्धी सर्व रोगों की सर्वोत्तम औषधि है, वरञ्च उचित अनुपान से प्रत्येक रोग में वर्ता जाता है, कई घर इससे बस गए हैं, बभुक्षित पारा से तैयार कृत का मूल्य १००) तोला, शुद्ध पारद से तैयार कृत २०) तोला है॥

नोट—एक २ भस्म कई प्रकार से तैयार की जाती है। बाज २ बीस २ प्रकार की तैयार हैं, किञ्चित् के नाम दिये हैं।

अब पुरुषों के विशेष रोग सम्बन्धी तिला अंकित होते हैं।

तिला नं० १—कुछ सुगन्धि युक्त है, बूढ़ों को भी प्रबल बना देता है, युवकों को विशेष रूप से लाभकारी है, हस्तकारों को और जो शौकिया बल बढ़ाना चाहें यह तिला हितकर है, नसों और पट्ठों को बल देता है, मूल्य ४ डराम ५) नमूना एक डराम १।)

तिला नं० ३, (तिलाय महत)—हस्तकारों को विशेष रूप से हितकर है, साधारण अवस्थाओं में बहुत गुण करता है, मूल्य ४ डराम १), नमूना =)

तिला नं० ४, (तिलाय मायूसीन)—यह बड़ा प्रचण्ड है, चर्म का एक परत उतार देता है, परन्तु हस्तकारों की नसों पट्ठों को बहुत शीघ्र ठीक करता है, ४ दिन के सेवन से पर्याप्त बल आता है। परन्तु खाने को अच्छी औषधि भी साथ हो। क्योंकि तिलाओं के सेवन के साथ पौष्टिक औषधि का सेवन होना आवश्यक है। निराश रोगियों को इससे लाभ हुआ है, शिथिलता, ध्वजभंग,

नपुंसकता दूर करके पूरा बल प्रदान करता है, मूल्य २ डराम ३), नमूना ।।।)

तिला नं० ६, (वर्द्धक)—इसके लगाने से········ बढ़ती है, और स्थूल होती है, मूल्य ४), आधी शीशी २), नमूना ॥)

तिला नं० ८, (बादशाही आनन्द वर्द्धक)—इसकी प्रशंसा क्या करें, जिसने एक वार आजमाया इस पर मोहित हुआ, नितान्त आनन्ददायक, नितान्त सुगन्धित जहां हो महक जावे, एक चावल पर्याप्त है, पुरुष स्त्री के आनन्द की कोई सीमा नहीं है मूल्य १२) तोला, ३ माशा ३), नमूना १ माशा १=)

तिला नं० १० (उत्तेजक व स्तम्भक)—यह लेप न केवल उत्तेजक है, लम्बाई और स्थूलता देता है, वरंच स्तम्भक भी है, जो लोग बन्धेज की औषधि खाना पसन्द नहीं करते उनके काम की वस्तु हैं, मूल्य १) रु० १ तोला, नमूना ।) है ॥

तिला नं० ११—आनन्ददायक है, और बहुत गुणकारी है, गहरा प्रेम उत्पन्न करने का हेतु है, आनन्ददायक, तत्काल द्रावक है, मूल्य १), आधा ॥)

तिला नं० १४—अत्यन्त पौष्टक तिला नं० ४ से भी बढकर मूल्य ६) अर्द्ध शीशी ३)

स्त्रियों तथा बालकों सम्बन्धी किंचित औषधियां ॥

प्रदरान्तक लोह—किसी प्रकार का प्रदर हो, लाल, पीत, श्वेत, इस से दूर होता है। कटि पीडा, बेकायदगी सब दूर करता है, मूल्य ३२ गोली २), नमूना ।)

पताली (रजिस्टर्ड)—ऋतुस्राव का कम होना, व न आना, वेदना सहित आना, और तत्सम्बन्धी सब रोगों को दूर करके ऋतु को खोलता है, और बल प्रदान करता है । स्त्रियों के लिए टानिक औषधि है, मूल्य ४ औंस २), नमूना १ औंस ॥)

चीनी गोली (रजिस्टर्ड)—बाज स्त्रियों के लिये पेय औषधि का सेवन करना कठिन होता है, उनके वास्ते यह गोलियां तैयार

की गई हैं। यह आर्तव के खोलने और पीडादि नाशने में प्रायः वैसाही प्रभाव रखती हैं। मूल्य ३० गोली २) रु० नमूना ।)

खारी वत्ती (रजिस्टर्ड)—ऋतुस्रावक औषधियों के साथ यह वत्ती भी वर्तने से बहुत सहायता मिलती है, रज शीघ्र प्रवाहित होता है.........में गोली रखी जाती है, मू० २) रु० अर्द्ध १) है॥

सोमावती (रजिस्टर्ड)—स्त्रियों को जो श्वेत पानी जाता है, जिसको ल्यूकोरिया, श्वेत प्रदर, जिरयानुलरहम, सेलानेरतूबतजना, सोमरोगादि भी कहते हैं। चाहे किसी प्रकार का और किसी दर्जा का हो, इस से आराम आजाता है, मू० २४ मात्रा २), नमूना ८ मात्रा ॥) साधारणावस्थाओं में ८ मात्रा ही पर्य्याप्त हैं॥

गर्भ चिन्तामणि रस—गर्भिणी के सर्व रोग, ज्वर, कास, अजीर्ण, शोथ, जी मतलाना, वमन, अतिसार, उदरशूल, शोथादि को लाभ करती है, गर्भिणी की कोई भी व्याधि हो इस से लाभ होता है। स्मरण रहे कि गर्भ के वमन के वास्ते अमृतधारा भी अति हितकर है। मूल्य ३२ गोली २) रुपया। नमूना ४ गोली ।)

मोतीपाक (माजून मरवारीद)—जिन स्त्रियों का गर्भपात हो जाता है, उन को जब गर्भ का पता लगे तो उसी समय इस औषधि को आरम्भ करके प्रथम तो पूरे दिनों तक अन्यथा उस मास के अन्त तक जिस में गर्भ गिरता है, इस औषधि को खाना चाहिये, अक्सीर है, न केवल गर्भ रक्षा करती है, अपितु तालक व प्रसूतः को कई रोगों से सुरक्षित रखती है। मू० १ पाव १०)रु०

मीठा फल (रजिस्टर्ड) चमत्कारिक औषधि—यह एक विचित्र, संसार के अचम्भे में डालने वाली औषधि है। जब गर्भ हो जावे तो दो मास के पश्चात् तीसरे मास जबकि अंग बनते हैं। इसकी केवल १ दिन ३गोली दूध से खिलाई जाती है। अचिन्त्य प्रभाव से यह ऐसा करता है, कि पुत्र ही उत्पन्न होता है। चाहे गर्भ के भीतर पुत्र हो या पुत्री। जिसके पुत्रियां ही उत्पन्न होती हैं उन के वास्ते विशेष रूप से ईश्वरीयदान है। इसके साथ यह प्रतिज्ञा होती है, कि यदि कन्या उत्पन्न हो तो मूल्य वापस कर दिया जायगा यह प्रतिज्ञा इस लिये है कि नई बात होने से कई

लोग विश्वास नहीं करेंगे और १०) व्यय करने से झिझकते हैं। मू० १०)

वंद प्रसूत (रजिस्टर्ड)—जब रक्त मासिक के इलावा जारी होतो इस दवाई के तीन दिन के सेवन से बंद होगा, मात्रा ९ दिन की २) नमूना ।॥)

मन रंजन (रजिस्टर्ड) हिस्टिरिया की दवाई—स्त्रियों के इस रोग की अनुभूत औषधि है, मूल्य ६४ गोली ४) नमूना १६ गोली १)

ब्रह्मपुत्र रस (रजिस्टर्ड) अठरा की दवाई—कतिपय स्त्रियों के संतान होकर मर जाती है। जिसको अठरा या सूखिया मसान कहते हैं। गर्भाधान से लेकर पूरे दिनों तक और कुछ मास पश्चात् तक इन गोलियों को सायम प्रातः खिलाया जाता है, और ईश्वर की कृपा से बालक जीता रहता है। मूल्य ७०० गोली १०) रुपया॥

दायालायक (रजिस्टर्ड)—यह औषधि प्रसूत समय देने से स्त्री सुगमता से बालक जनती है। रक्त कम यथावश्यक जाता है। प्रसव के पश्चात् होने वाले रोग दूर होते हैं। मूल्य १॥), नमूना ॥)

सुखजनाई (रजिस्टर्ड)—इस औषधि को केवल कटि पर बांधने से बालक सुगमता से उत्पन्न होता है। मूल्य १ रुपया, जो एक वार को पर्याप्त है॥

अवला सुख उष्ण (रजिस्टर्ड)—यह औषधि स्त्रियों के अनेक रोगों को गुणकारी है, और उनको बलदायक टानिक है। जो स्त्रियां निर्बल हों, दिनों दिन भोग इच्छा नष्ट होती जावे, प्रसूत के कारण कोई खराबी हो, निर्बल हों, यह दवाई गुण करती है। मूल्य ४० गोली ३), नमूना १० गोली ।॥), यह कफज वातज प्रकृति स्त्रियों के लिए है॥

अवला सुख शीत (रजिस्टर्ड)—इसके भी उपर्युक्त गुण हैं, और पित्त प्रकृति स्त्रियों के लिये है। मात्रा ६ माशा, मूल्य ४० खुराक ३), नमूना १० खुराक ।॥)

प्राण सुख (रजिस्टर्ड)—स्तनों को ढलकने से बचाता है, और ढलके हुए को प्रकृत अवस्था पर लाता, और कठोर व दृढ़

करता है, भद्दे स्तन स्त्री के लिये दुखदाई हो जाते हैं। मूल्य ४)

गोदभरी (रजिस्टर्ड)—जबकि पुरुष का वीर्य्य ठीक हो, यह गोलियां स्त्री को ऋतुस्नान पश्चात् खिलाई जाती हैं, और एक दवाई भीतर रक्खी जाती है। प्रथम तो प्रथम ही मास अन्यथा अधिक से अधिक चौथे मास के भीतर ईश्वर की कृपा से गर्भ स्थित हो जाता है। मूल्य दोनों औषधियों का ५) है॥

गर्भ प्रतिबन्धक—ठीक हाल लिख कर पूछिये॥

काकड़ सत (रजिस्टर्ड)—बालकों के प्रायः रोग या अजीर्ण, अतिसार, ज्वर खांसी आदि को हितकर है। प्रत्येक बालकों वाले गृह में रखनी चाहिये। मूल्य ॥), नमूना =)

बालकों के डब्बा रोग की औषधि—बालकों के डब्बा अर्थात् पसली रोग के वास्ते यह औषधि रसायन अर्थात् अतीव गुणकारी है। मूल्य १ तोला ५) रुपये, २ माशा १)

बाल सुख (रजिस्टर्ड)—यह बालकों के वास्ते टानिक औषधि है। मन्दाग्नि, कोष्ठबद्धता, हरे पीले दस्तों का आना, ज्वर, तृषा, कृशता, बालक का सूखते जाना, और सदैव रुग्ण रहना, पित्ताधिकता, सब दूर होते हैं। मूल्य ६४ गोली १), नमूना =)

फूलो फलो (रजिस्टर्ड)—यह सूखिया मसान की विचित्र औषधि है। इस को केवल कटि पर मला जाता है, और वहां से महीन २ कृमि निकलते हैं, वही रोग का कारण होते हैं। भीतर से सब कृमि निकल जाते हैं, वह बालक जो प्रतिदिन सूख रहा था, हड्डियां ही हड्डियां दिखाई देती थीं, अब प्रफुल्लित होना आरंभ होता है। मूल्य धनवानों से १००) साधारण से ५) निर्धनों से १)

सुखहरा—यदि बालक सूखता जावे तो इसको रोज देर तक खिलावें मूल्य ६४ गोली १), नमूना ८ गोली =)

काली दूर (रजिस्टर्ड)—बालकों के वास्ते यह गोलियां बहुत गुणकारी है, थोड़े दिनों में ही लाभ होता है, मूल्य १६ गोली ॥)

उपदंश औषधियां॥

उपदंश की औषधि—उपदंश कठिन रोग है। यदि बेपरवाही की जाय, तो पीढियों तक पीछा नहीं छोड़ता। उपदंश नर तथा मादीन के भेद से दो प्रकार का होता है। नर में गहरे घाव

केवल लिंग पर होते हैं। मादीन का विष रक्त में प्रविष्ट हो जाता है, और शरीर फूट पड़ता है। इसका पहला घाव साधारण होता है, दूसरे में शरीर पर काले दाग, ताम्र रंग की फुन्सियां और छोटे २ घाव आदि निकलते हैं। तीसरे दर्जे में हड्डी तक प्रभाव चला जाता है। बड़े २ घाव कुष्टवत होते हैं। उपदंश के वास्ते कई औषधियां तैयार रहती हैं। साधारण रूप से यह हैं, अपनी अवस्थानुसार मंगालें।

उपदंश औषधि नं० २—यह उपदंश के तीनों दर्जों नर व मादीन के वास्ते हितकर है। पैतृक उपदंश के वास्ते भी हितकर है। मूल्य ४) रुपया, अर्ध औषधि २) रुपया॥

उपदंश औषधि नं० १३—उपदंश नर तथा मादीन को १४ दिन में आराम करती है। अव्वल दर्जे का अकसीर है, दूसरे दर्जे मे भी गुणकारी है। मूल्य ६० गोली ४) रु०, ३० गोली २) रुपया॥

उपदंश औषधि नं० १४—इससे २० या अधिक से अधिक ४० दिन के भीतर आराम आता है, केवल एक बूटी है। दर्जा अव्वल में अद्वितीय है। मूल्य ४० गोली ४) रुपया, २० गोली २)

उपदंश औषधि नं० १६, (उपदंश विरेचन)—जब कि रोग जीर्ण हो चुका हो, या ऐसा दुसाध्य हो, कि आराम न आता हो तो पहिले जुलाब लेना उचित होता है। यह औषधि ३ माशा या अधिक से अधिक ६ माशा खिलाई जाती है। इस से उचित विरेचन होकर उपदंश का विष निकल जाता है। जिस को असौज, कार्तिक, या चैत्र फाल्गुण में, उपदंश के फूटने का भय हो, वह ऋतु के आरम्भ में यह विरेचन लेलें। मूल्य ६ माशा १) रुपया॥

नोटः—भस्में जो उपदंश में वर्ती जाती हैं यह हैंः—संखिया दारचिकना, रसकपूर मिश्रित या अलग, पारद, तुत्थ इत्यादि॥

सारसारिष्ट मिश्रित—बहुत सी वैद्यक औषधियां का संग्रह है, उपदंश द्वितीय, तृतीय दर्जे में हितकर है। फोड़ा फुन्सी, दाग चंबल दाद, कृष्णदाग, ताम्र वर्ण धप्पड़, खुजली आदि को दूर कर के शरीर को कुन्दनवत करता है। उन सब रोगों में जिनमें विलायती सारस्परीला वर्ता जाता है, यह अधिक गुणकारी प्रमाणित होगा। मधुमेह, प्रमेह को हितकर है। प्रमेह के पश्चात् जो कारबालक भयंकर फोड़े (प्रमेह पिड़िका) निकलते हैं, उनको भी

हितकर है। बात रक्त, भगन्दर को गुणकारी है। उत्तेजक और सुखदायक है। कण्ठमाला, सन्धिवात, और उपदंश को भी हितकर है मूल्य फी शीशी २) रुपया, नमूना ।=)

इन्द्रा तैल—दूध में डाल कर खावें ७ दिन में आराम मू० २)

सोज़ाक की औषधियां ॥

सोजाक में पहिले जलन व पीडा होती है, नितान्तकष्ट होता है, दूसरे दर्जे में पीव आनी आरम्भ होती है, कुरेह होजाता है, जलन धीरे १ बंद होजाती है, और केवल पीप जाती है, वा तार से निकलते हैं, इस से बढ जावे तो तीसरे दर्जे में मूत्रावरोध हो जाता है, मूत्र की नाली संकीर्ण होजाती है, कभी २ मूत्र रुक जाता है, तीसरे दर्जे में पहुंचा हुआ बडी कठिता से दूर हो सकता है, और जीर्ण हो जावे तो जाता ही नहीं, सोजाक के वास्ते भी बहुत सी औषधियां तैयार रहती हैं; अवस्थानुसार दी जाती हैं:—

सोज़ाक औषधि नं० १—प्रथम दर्जे में अकसीर का काम देती है, २४ घण्टे के भीतर जलन दूर होती है, थोडे दिनों में पूर्ण लाभ होता है, यदि पीब भी हो और जलन भी साथ हो, तो इसको खाकर पहिले जलन दूर करनी चाहिए। मूल्य ४ डराम १) नमूना ≈)

सोज़ाक औषधि नं० २—बडे ही तजुरुबों के पश्चात् हमारा स्वयम् निर्माण कृत योग अकसीर सोजाक व कुरेह है, जो कि सोजाक की प्रत्येक अवस्था में गुणकारी है, दाह भी हो, दोनों मिले हुए हों, सब को अकसीर अचूक औषधि है, शुक्रमेहादि, को हितकर है, मूल्य ६० गोली ४), नमूना १५ गोली १) है।

सोज़ाक औषधि नं० ३, अकसीर कुरेह—यह औषधि केवल कुरेह अर्थात् पीब जाने पर दी जाती है, एक ही दिन के भीतर पीब बंद होनी आरम्भ होती है, इसके अतिरिक्त उपदंश को हितकर है, इस वास्ते जब सोजाक व उपदंश एक साथ हों तब भी हितकर है, दमा खांसी आदि रोगों को दूर करता है, मूल्य २, नमूना ।)

नोट—भस्मों में से सीप भस्म, संगजराहतभस्म, जहरमोहराभस्म, फिटकरीभस्म, और पारदादि हितकर हैं ॥

बवासीर की औषधियां

यूं तो बवासीर ६ प्रकार की होती है, परन्तु बडे दो ही

भेद हैं, रक्तार्श वा वातार्श कभी पैतृक भी होती है, जो कष्टसाध्य है, साधारणतः निम्नलिखित औषधियां हैं:—

अर्शौषधि नं० ३—यह खूनी व बादी दोनों को हितकर है और साधारणतया इस से आराम आजाता है, मूल्य ४० गोली २)

अर्शौषधि नं० ५—जब बवासीर के कारण अति कष्ट हो दाहादि से रोगी व्याकुल हो, यह ओषधि शांति देती है, जैसे अग्नि पर पानी। मूल्य १) नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ७—यह विशेष कर रक्तार्श को लाभ दायक है, ७ दिन के भीतर रक्त बन्द होता है और २-३ सप्ताह में पूरा आराम होता है। मूल्य ४० गोली २) रुपया, नमूना ।)

अर्शौषधि नं० ९, (अकसीर बवासीर व शीघ्रपतन)—यह ओषधि बलबर्द्धक, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, शुक्रमेहादि को लाभ दायक है विशेष कर रक्तार्श के लिए, मूल्य ३० गोली ५), नमूना१)

नोट—इनके अतिरिक्त चन्द्रप्रभावटी, (अकसीर नं० ३१,) लक्ष्मी विलास रसादि वर्णन हो चुके हैं ॥

प्लीहोदरौषधियां

मैलेरिया ज्वर अधिक देर रहने से तिल्ली बढ़ जाती है, और मैलेरिया चिरकाल तक बना रहता है, फिर ज्वर हट जाने से भी तिल्ली बनी रहती है, कभी उदर की अन्य खराबियों से तिल्ली बढ़ती है, निम्न लिखित औषधियां प्रायः देते हैं:—

प्लीहादि औषधि नं० १—मैलेरिया, तिल्ली दोनों दूर मूल्य २)

प्लीहोदरौषधि नं०२—यह औषधि उस समय दी जाती है, कि आमाशय निर्बल हो, तिल्ली साधारणतः बढ़ी हो, क्षुधा कम लगती हो, मात्रा ६गोली नित्य। २४० गोली २), नमूना ।)

प्लीहदरौषधि नं०३—पौष्टिक है, चेहरे को शीघ्र लाल करती है, बल को बढ़ाती है, अग्नि सन्दीपन है, मैलेरिया के पुराने कीटाणु दूर होते हैं, सब प्रकार की तिल्ली दूर होती है, मात्रा २ रत्ती, मूल्य ६माशा ४) रुपया, १॥ माशा १) रुपया ॥

प्लीहोदरौषधि नं० ५—जबकि प्लीहा के साथ कोष्ठबद्ध हो, या तिल्ली बहुत ही पुरानी और बढी हुई हो, तो यह औषधि गुणदायक है, उपरोक्त किसी भी औषधि के खाते समय इस

औषधि को जारी रक्खा जावे, रात्रि को सोते समय एक गोली खाने से प्रातः खुलकर शौच आएगा और तिल्ली कम होती जावेगी। मूल्य ६० गोली १) रुपया, नमूना चार आना ॥

प्लीहोदरौषधि नं० ६—यह उस दशा में विशेष रूप से हितकर है, जब कि ज्वर भी साथ हो, या कभी २ होजाते हों, पाण्डु को दूर करती है, शरीर को वल देती है, मूल्य २), नमूना ।)

उदर रोगों की औषधियां

करकोल (रजिस्टर्ड)—आमाशय सम्बन्धी सर्व रोगों की अचूक औषधि है, अहार पच कर पूरा बल प्रदान करता है, खाया पिया सब पच जाता है, क्षुधा बढ़ती है, आज कल के दिनों में जब कि पक्वाशय सम्बन्धी व्याधियां बहुत बढ़ी हुई हैं, लगभग सब अमीर मन्दाग्नि ग्रस्त दिखाई देते हैं, यह औषधि प्रसाद प्रमाणित होगी मूल्य ६०गोली २) रुपया ३०गोली १), नमूना ।)

लालज्वाहर (रजिस्टर्ड)—उदर पीड़ा, गुडगुहाहट, वमन, विषूचिका, अतिसारादि, रोगों को हितकर है, पाचन शक्ति खूब बढ़ती है, अन्य पाचक चूर्ण इसके सन्मुख तुच्छ हैं, मूल्य २), नमूना ।)

एलवसा (रजिस्टर्ड)—शूल, पेट की वादी, गुड़गुड़ाहट को हितकर, क्षुधावर्द्धक है, कोष्ठवद्धता को दूर करती है प्रत्येक घर में बर्तना चाहिए, मूल्य ६४ गोली १), नमूना ८गोली =)

प्राणदाता (रजिस्टर्ड) (विषूचिका की अकसीर औषधि)—अमृतधारा भी विषूचिका के वास्ते अमृत है, तथापि ऐसे भयंकर रोग के वास्ते किंचित अन्य औषधियां भी हमेशा तैयार रखना चाहिए, यह हमारी अनुभूत औषधि है, और ५ घण्टे के भीतर ही इस से प्रायः आराम आजाता है, वमन विरेचन बन्द होकर ज्वर दूर हो जाता है। मूल्य १५गोली १) रुपया, सदैव पास रक्खो ॥

दस्त विरेचन (रजिस्टर्ड)—यह गोलियां जुलाब के लिये अनुपम हैं एक दो गोली रात को सोते समय खाने से प्रातः समय खुलकर शौच हो जाता है, एक दस्त आता है, कोई कष्ट नहीं होता, शरीर सुखमय हो जाता है। १०-१२ गोलियां खाने से ८ दश जुलाब खुलकर हो जाते हैं, तीनों दोषों के बेग को दूर करती हैं। मूल्य १००गोली १), नमूना १२गोली =)

आराम जान (रजिस्टर्ड)—पश्चात् तय्यार की गई है, इस से विरेचन नहीं होता, केवल शौच खुलकर आता है, और प्रति दिन खाने से अन्त्रियों का बल बढकर सतत कोष्टवद्धता दूर हो जाती है, और दूसरी औषधियों की तरह आगामी कोष्टवद्धता बढती नहीं है, एक और उत्तमता यह है कि इस में एक औषधि वलवर्धक सम्मिलित की गई है, जिस से यह शुक्र रोगियों को जब कि उनको कोष्टवद्धता भी साथ हो, दूसरी किसी पौष्टिक औषधि के साथ २ बहुत गुणकारी होती है, मूल्य ३२ गोली १) रुपया १६ गोली ॥) है।

गन्धार रस (रजिस्टर्ड)—कठिन से कठिन और जीर्ण से जीर्ण अतिसार मरोड, संग्रहणी आदि थोडे दिनों में दूर। प्रायः एक ही मात्रा से अतिसार मरोड़ादि को आराम आता है, विषूचिका के वमन विरेचन को आराम होता है, अतिसार व मरोड़ के वास्ते ऐसा हितकर अन्य औषधि न होगी। मूल्य १), नमूना ≈)

शूलवटी (रजिस्टर्ड)—यह गोलियां सब प्रकार का उदर शूल यहां तक कि परिणाम शूल को भी हितकर है, घरों में प्रायः उदरशूल रोग हो जाया करता है, इन गोलियों को रखना अच्छा है, मूल्य ६०गोली १) ३० गोली ॥) १५गोली ।)

यकृत, गुरदा, हृदय की औषधियां

हयात अफ़ज़ा (रजिस्टर्ड)—हृदय की निर्बलता और धड़कन के वास्ते अनुपम औषधि है, २८ दिन में आराम आता है। २८ दिन की मात्रा का मूल्य २) रुपया, नमूना ।≈)

नोटः—चांदी भस्म, संग यश्व भस्म भी हृदय के लिए बड़ी हितकर है। भस्मों के वर्णन में देखो॥

मण्डूर वटिका—कामला, श्वेतवर्णता, पांडु रोग, यकृत की निर्बलता के वास्ते रामबाण है, शुद्ध रक्त उत्पन्न होकर रंग लाल होता है, वैद्यक की प्रसिद्ध औषधि है, मूल्य १६ गोली १) रुपया॥

संगतोड़(रजिस्टर्ड)—पथरी, कंकर को तोड फोड़ मूत्र के रास्ते निकालता है मूल्य २) अर्द्ध १) है।

ब्रह्मलोह (रजिस्टर्ड)—यकृत के रोगों को दूर करता है खून शुद्ध उत्पन्न करके चेहरे को लाल करता है मूल्य १०) तोला।

नेत्र रोग सम्बन्धी पेटण्ट औषधियां ।

अखठंड (रजिस्टर्ड)—यह सुरमा दैनिक सेवन के वास्ते है, नेत्रों को प्रायः रोगों से सुरक्षित रखता है, दृष्टि स्थिर रखता है, और शीतलता प्रदान करता है। मूल्य १ तोला ॥) नमूना केवल -)

अखदोष (रजिस्टर्ड)—नेत्र रोग यथा पानी जाना धुन्ध, नया फोला, जाला, कुकरे, पड़वाल आदि को दूर करता है। मूल्य १ तोला ।॥), नमूना -)॥

फोला क्योरा (रजिस्टर्ड)—यह सुरमा फोला के वास्ते विशेष रूप से हितकर। धुन्ध, जाला, कुकरा आदि को बहुत शीघ्र दूर करता है। मूल्य ८) तोला, ६ माशा ४), नमूना १)

पड़वाल क्योरा (रजिस्टर्ड)—पड़वालों के लिये विशेष रूप से हितकर है। पड़वालों को उखाड़ २ कर लगाया जाता है। तो फिर नहीं उगते। मूल्य ४) तोला, ६ माशा २), नमूना ३ मा० १)

मोतिया क्योरा (रजिस्टर्ड)—इससे मोतियाबिन्द, पानी उतरना, बन्द होता है। प्रायः २ मास में पूर्ण लाभ होता है। मूल्य ८) तोला, ३ माशा २), नमूना १ माशा ॥≈)

भीमसेनी कर्पूर—वैद्यक का प्रसिद्ध योग है। नेत्र के सब रोगों को दूर करता है। ढलका, शोथ, पीड़ा, गरमी, दाह, खुजली, धुन्ध, जाला, पानी बहना, ललाई सब दूर होती हैं। अव्वल दर्जे का दृष्टि शक्ति बर्धक है। इसके अतिरिक्त और बहुत से काम आता है। उत्तेजक और बल वर्धकादि औषधियों में पड़ता है। उचित तो यह है, कि जहां किसी योग में कर्पूर लिखा हो, वहां इसको डालें, तभी वह योग पूरा लाभ देगा। मूल्य १५) रुपये तोला, ३ माशा ३।॥), १ माशा १।)

नूर बिन्दु (रजिस्टर्ड)—सर्व अक्षि रोगों को रामबाण मूल्य २)

कान के रोग ।

कर्ण तैल—कर्ण रोग यथा दर्द, पीव, घाव, कानों में सायँ २ आदि शब्द आना, श्रवण शक्ति हीनता को हितकर है। मूल्य १)

कर्ण पीड़ा नाशक—कर्ण पीड़ा के वास्ते यह कर्ण रोग औषधि अद्वितीय है। एक दो बून्दें भीतर जाते ही आराम आ जाता है। मूल्य ४ डराम १) रुपया, नमूना १ डराम ।)

बधिर नाशक—इसको कानों में डालते रहने से बहरापन दूर होता है। यदि पीवादि भी जाती हो तो पहिले कर्ण तैल डाल कर उसको दूर कर लेना चाहिये। मूल्य १ औंस २), नमूना ॥)

नासा रोग सम्बन्धी पेटन्ट औषधियां ॥

दन्त नसवार (रजिस्टर्ड)—यह नसवार अद्वितीय है, जो सदैव पास रखने योग्य है। इस निस्वार के देते ही शिरोवेदना आधा शीशी, दाढ दर्द, कर्ण पीडा, नेत्रपीड़ा, प्रतिश्यायादि दूर होते हैं, मृगी, सन्निपात तक को हितकर है। मूल्य १) तोला, नमूना ।), इस से छींक कभी आती है, कभी नहीं आती ॥

छिक छिक (रजिस्टर्ड)—इसके लेने से छींक खूब आती हैं। नजला, जुकाम, को दूर करती है, शिरोवेदन जो प्रतिश्याय बाकी दोष से हो बन्द होता है। मूल्य १शीशी १), नमूना =)

मलूकी (रजिस्टर्ड)—इस निसवार के लेने से कृमि थोडे दिनों में गिर जाते हैं। मूल्य ॥) फी शीशी ॥

हरीत (रजिस्टर्ड)—चाहे कितनी देर से नकसीर जाती हो, इसके कुछ दिन नाक में डालने से बन्द हो जाती है। मूल्य ॥)

• कफकेतु रस—इसके खाने से नजला, जुकाम, कफज खांसी को तत्काल आराम आता है, जब नजला के जुकाम का वेग हो १-२ गोलियां, अर्क गावजुबान से खालें, और कफज रोगों में लाभदायक है ॥ मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

दन्त रोग सम्बन्धी पेटन्ट औषधियां ॥

मञ्जन नं० १—दन्त रोगों यथा रक्त स्राव, पानी निकलना, पानी लगना, दन्त पीडा, मुख दुर्गन्ध, को हितकर है, मूल्य ।) नमूना -)

मञ्जन नं० २—विशेष कर दांतों की सफाई के लिए बनाया गया है, इस के मलते रहने से दांत मोतियों के समान चमकने लगते हैं, जिनके टारटर (मैल जम गया हो, वह उसे उतार कर मलते रहें तो फिर न जमेगा, मूल्य ।) नमूना -)

मञ्जन नं० ३ कारबालिक—यह मञ्जन अंग्रेजी प्रकार का है, रंग गुलाबी, कारबालिक टूथ पौडर है दन्त कृमि नाशक है, दांतों को स्वच्छ करता है, जो विलायती मञ्जन को पसन्द करते हैं, वह इस को सेवन करें, मूल्य ।), नमूना -)

सौंदर्य्य सम्बन्धी अपनी पेटन्ट औषधियां।

बाल उड़ाने की अनुपम औषधि—इस को पानी में घोल कर लगाने से एक मिन्ट के भीतर कठोर से कठोर और कोमल से कोमल स्थान के बाल जड़ से दूर होते हैं। जिस २ ने मंगवाया प्रशंसा की है, मूल्य फी डबिया ।=), नमूना -)॥

बाल दूर करने की औषधि (अर्थात बाल आयु पर्यन्त न उगें)—बाल दूर करने की औषधि के मलने से फिर उमर भर बाल नहीं आते, बालों को साफ करके इस को लगाया जाता है, इस से आगामी बाल निकलने बन्द होते हैं। मूल्य १॥) फी शीशी नमूना नहीं, यदि बाल उग आवें तो दाम वापिस ॥

बाग फूल तैल (रजिस्टर्ड)—बाल पर सब तैलों का शिरोमणि है, बालों को कोमल करता है, बढ़ाता है, शिर को शीतल रखता है, स्याही स्थिर रखता है, केवल सुगन्धित ही नहीं हितकर भी है। मूल्य प्रति शीशी १) रुपया ॥

मुखरोब (रजिस्टर्ड)—यह तैल न केवल मूछों को वरंच प्रत्येक स्थान के बालों को बढ़ाता है, उनकी स्याही स्थिर रखता है, आहा! रोबदार मूछों वाला चेहरा कैसा भला मालूम होता है, मूल्य फी शीशी २ औंस २) नमूना ।)

चित मोहनी (रजिस्टर्ड)—इस उबटन को स्नान समय मलने से चेहरे के बुरे दाग, कील, छाइयां आदि दूर होकर चेहरा साफ होता है, झुरियां नहीं पड़तीं, चेहरे का रंग दिन प्रतिदिन निखरता जाता है, सूरत मनमोहिनी होजाती है, विलायत की लेडियां इस को लगा कर विस्मित होती हैं कि एक भारतीय औषधि उनकी हजारों ऐसी औषधियों की तुलना में उत्तम है, मूल्य केवल १) रुपया, नमूना =)

दिल सुन्दरी (रजिस्टर्ड)—यह स्नान के पश्चात् सेवन किया जाता है, एक प्रकार का तैल है, जो चेहरे को चमकाता है, और दाग कीलादि को दूर करता है, यदि स्नान से पहिले उबटन, और स्नान पश्चात् सौन्दर्य्य वर्द्धक का सेवन हो, तो बस कहना ही क्या है? मूल्य फी शीशी ॥।=), नमूना =)

अमृतधारा साबुन—यह साबुन अमृतधारा डाल कर बनाया गया है, प्रति दिन वर्तने के वास्ते, एक उत्तम साबुन है, चर्मज रोग, दाद, खाज, चम्बल, पाका, फोड़ा, फुन्सी, को गुणकारी है, मूल्य ॥।=) प्रति बक्स, ।-) प्रति टिकिया ॥

मुख रोग सम्बन्धी अपनी पेटन्ट औषधियां

मुख रक्षक—मुख के छालों के वास्ते हितकारी है, चाहे बालकों को हो, वा बड़ों को, मूल्य ॥) नमूना =)

गला क्योरा (रजिस्टर्ड)—यह गोलियां कण्ठ व छाती के रोगों के वास्ते रसायन हैं, जिनको शीघ्र २ स्वरभेद हो जाता है, उनके वास्ते गुणकारी है, धांस, कण्ठ खाज, मुख में छाले, लाल जिह्वा इत्यादि को लाभदायक हैं, मुख में रख कर दो तीन गोली प्रति दिन चूसना चाहिये, मूल्य १६ गोली ॥)

कोकली (रजिस्टर्ड)—वकीलों, वैरिस्टरों, लैक्चरारों, उपदेशकों, पण्डितों, रागियों, स्कूलमास्टरों, आदिकों, को जिनको बोलने का काम है, यह गोलियां रखनी चाहियें, यथावश्यक एक गोली मुख में रखने से गला नहीं बैठता, बैठा हुआ जल्दी खुलता है, और कुछ दिन लगातार खाने से कण्ठ सुरीला होजाता है। मूल्य ३० गोली २), नमूना ।)

चर्मज रोग व घाव सम्बन्धी अपनी पेटन्ट औषधियां ॥

दद्रुघ्न औषधि—इसके कुछ दिन लगाने से दाद चाहे किसी जगह हो, आराम आजाता है, चम्बल को भी हितकर है, बहुत नरम जगह पर जब कि खुजाया हुआ हो, थोड़ी देर लगती है, दूसरी जगहों पर नहीं लगती, दाग, धप्पड़ कुछ नहीं पड़ता, वस्त्र खराब नहीं होते, इसको लगा कर कोई काम बन्द नहीं करना पड़ता, मूल्य १) ४ ड्राम, नमूना १ ड्राम ।)

तैल नायाब (रजिस्टर्ड)—फोड़ा, फुन्सी, पित्त, लाल व श्वेत दाने, दर्द आदि चर्मज रोगों पर लगाने और खाने से गुण करता है। मूल्य २ औन्स २), नमूना ४ ड्राम ॥)

रोग़न मसीहा (रजिस्टर्ड)—जीर्ण से जीर्ण नासूर को दूर करता है, भगन्दर को हितकर है, इसके लगाने से प्रथम सब पीब निकल कर भीतर से भरना आरम्भ होता है, अन्य सर्व प्रकार के घावों को भी बहुत गुणकारी है, कुर्रह को इसके खाने से लाभ होता है। मूल्य १ औन्स ३), ४ ड्राम १॥), नमूना १ ड्राम ।=)

सूर्य्य घृत—इसको शरीर पर मलने से सब प्रकार की खाज तर व खुश्क दूर हो जाती है। फोड़ा, फुन्सी, जिनको कई प्रकार के निलकते रहते हैं, उनको रसायन है, गलित कुष्ट भी सर्वथा स्वच्छ हो जाते हैं,। चर्मज रोगों को अत्यन्त लाभदायक है। मूल्य २ औन्स १), नमूना ४ ड्राम ।)

मरहम अकसीर (रजिस्टर्ड)—बड़े २ फोड़ों को थोड़े दिनों में भर लाता है, दाद, चम्बल, घाव, उपदंश, अग्नि से जलना, फोडा फुन्सी आदि को हितकर है, अनुपम वस्तु है, प्रत्येक घर में रहनी चाहिये, मूल्य १ डबिया १) आधी डब्बी ॥)

विष रोग सम्बन्धी अपनी पेटन्ट औषधियां ॥

बिच्छू काटे की औषधि—डंक स्थान पर लगाने से तुरन्त आराम आ जाता है, अमृतधारा का ही एक योग है। मूल्य ॥) शीशी, आधी शीशी ।)

बावले कुत्ते काटे का इलाज—मूत्र मार्ग से विष निकल जाता है, और सब निकलता हुआ देख सकते हैं, जल्दी का होतो तीन दिन पर्य्याप्त है, नहीं तो सप्ताह दो सप्ताह, मूल्य १० खुराक ६) रुपये, ३ खुराक २)

तिरयाक (अगद नाशक)—ज्ञात या अज्ञात किसी भी विषैले डंक पर लगादो तुरन्त आराम होगा, यदि अमृतधारा पास हो तो इसकी ऐसी आवश्यकता नहीं। मूल्य फी तोला १), नमूना ।)

प्लेग की औषधि—७गोली तक खाने से प्लेग रोग जाता रहता है, यदि साथ अमृतधारा भी हो तो ९० प्रति सैकडा आराम आता है, यदि प्रति मास कुछ खा छोडा करें, तो प्लेग का भय जाता रहता है। मूल्य ४०गोली केवल ॥) है ॥

खांसी ज्वरादिक रोगों सम्बन्धी अपनी पेटन्ट औषधियां

खांसी की गोलियां—इन गोलियों को मुख में रख कर चूसने से नई खांसी, रुक्ष हो वा स्निग्ध, थोडे दिनों में लाभ होता है। मूल्य ६० गोली १), नमूना =)

जया गुटिका—यह गोलियां कफज, कास श्वास के वास्ते अति गुणकारी हैं। पुरानी खांसी इन से दो तीन सप्ताह में जाती रहती है, ज्वर साथ हो तो भी दे सकते हैं, विषम ज्वर को भी हितकर है, ज्वर पीड़ादि को भी हितकर है, मूल्य ३२ गोली २), नमूना ।)

अकसीर बदन (रजिस्टर्ड)—गले व छाती के रोग, कास श्वास, गले पड़ना आदि को हितकर है, जीर्णज्वर, रक्तवमन, राजयक्ष्मा को, खांसी में रक्त जान में, थोडे दिनों में पूर्ण गुण करता है, इस लिये अन्य औषधियों के साथ दिक्क, सिल, में इसको अवश्य सेवन करना चाहिये, निर्बल बालकों को बलवान बनाती है। दुर्बल शरीर वालों को स्थूल करती है। मूल्य फी शीशी १॥), अर्द्ध ॥।)

कण्ठमाला की औषधि—प्रायः ४० दिन के भीतर और कठिन अवस्थाओं में ८० दिन में इस दुष्ट रोग से प्रायः छुटकारा मिलता है। मूल्य ८० खुराक ५), ४० खुराक २॥)

ज्वरारि अभ्रक—यह गोलियां विषमज्वर के वास्ते अनुपम व अद्वितीय हैं, पुराना ज्वर और विशेष कर वह ज्वर जो चढ़ता उतरता हो, प्रायः पाहिले दिन छोड़ देता है, तृतीयक, चौथिया, दैनिक आने वाला हो, जिस दिन खावे उसी दिन नहीं आते। मूल्य १६ गोली १), ८गोली ॥) आना ॥

ज्वरार्क—मैलेरिया, जूड़ी, या मौसमी किसी प्रकार का ज्वर हो तीन दिन के भीतर जाता रहता है, मैलेरिया कृमि को नष्ट करने में रामबाण है, दैनिक आने वाला, नित्य दो बार आने वाला, तिजारिया, चौथिया, तिल्ली सबको दूर करता है। मूल्य ॥) शीशी, जिसमें युवा की ३ दिन की मात्रा होती है ॥

ज्वर वटी—ज्वरार्क की ही औषधियों से बनी है, और वही गुण हैं, किन्तु वैसी तत्काल गुणकारी नहीं, जो अर्क नहीं पीते उनके वास्ते है। मूल्य १२ गोली ॥)

बसन्तमालती रस—पुराने ज्वरों के वास्ते वैद्यक औषधियों में से हैं। तपदिक्क में दी जाती है, लिखा है कि जीर्णज्वर को हितकर है। धातु में प्रविष्ट हुआ ज्वर, रक्तातिसार, रक्तार्श, नेत्र रोगादि को हितकर है। बाल रोगों को हितकर है। गर्भिणी के ज्वर को भी हितकर है, और गर्भ की भी रक्षा करता है, मूल्य ८ गोली १)

तृतीयक ज्वर तन्त्र—इस औषधि को ज्वर चढ़ने से १ घन्टा पहिले मध्यमा उंगली पर बांध देने से ज्वर नहीं चढ़ता। मूल्य ॥)

नोटः—और बीसियों औषधियां ज्वर सम्बन्धी तैयार होती रहती हैं। वैद्यक में इसके सम्बन्धी सैंकड़ों रस हैं ॥

विविध रोगों की अपनी विशेष पेटन्ट औषधियां ॥

बलपूरवटी—इन गोलियों से आतशक, सोजाक, अर्श, कंठमाला, गठिया, संधिवात, कमर दर्द, सुस्ती, प्रमेह, शीघ्रपतन, अपाचन, सांप बिच्छू का डंक, बावले कुत्ते का विष, सिर पीड़ा, लकवा, मृगी, हिस्टिरिया, पागलपन, सेला, श्वेत प्रदर पुराना तप, विशेषतयः, चौथिया तप, दमा, खांसी, दाद, खारिश, आदि को लाभदायक है, मूल्य बहुत थोड़ी २४ गोली १) है।

सरस्वती (रजिस्टर्ड)—यह चूर्ण मस्तिष्क की निर्बलता के वास्ते अक्सीर है, प्रतिश्याय व जुकाम को दूर करता है, बधिरता

नाशक भी है, (जो कि कान बहने से हो जाता है) मूल्य १ डिबिया १) है।

दर्द शिकन (रजिस्टर्ड)—इसको एक ही पुड़िया के सेवन से चाहे किसी प्रकार की नसों व पट्ठों की पीड़ा हो, जाती रहती है। शिर पीड़ा, जोड़ों की पीड़ा, कटि पीड़ा गुल्फ, रान या किसी जगह की पीड़ा हो, तो १५ मिन्ट में आराम। पुरानी पीड़ा हो तो कुछ दिन सेवन करनी चाहिये। अन्यथा पहिली पुड़िया से ही आराम हो जाता है। जिनको दर्द शिर का रोग हो इसको अवश्य अपने पास रक्खा करें। एक पुड़िया ५ मिन्ट में पीड़ा बन्द कर देगी। मूल्य १) नमूना।)

ब्रह्मी अरिष्ट—स्मरण शक्ति के वास्ते इस से बढ़ कर कोई औषधि न होगी। मस्तिष्क की निर्बलता, शिर पीड़ा, पुरुषों के वीर्य्य सम्बन्धी रोग, स्त्रियों के रज सम्बन्धी रोग, शुक्रमेहादि को हितकर है, मल भेदक है। थोड़े दिनों में मस्तिष्क दिव्य हो जाता है। वाणी मधुर हो जाती है। गान विद्या और काव्य इस से शीघ्र आता है। मूल्य २) रुपया, शीशी ४ औंस ॥

बला दूर (रजिस्टर्ड)—इन गोलियों के खाने से अफीम छूट जाती है। सैंकड़ों मनुष्य इस से अफीम छोड़ चुके हैं। मूल्य ६० गोली १॥), जो रत्ती तक अफीम खाते हैं, उनके वास्ते ६० गोली पर्य्याप्त हैं। अधिक खाने वाले २-३ डिबिया यथा आवश्यक मंगा लें ॥

दर्शी—जोड़ों की पीड़ा, शोथ, सन्धिवात, अर्द्धाङ्गवात, आर्दितवातादि को हितकर है, मूल्य ६० गोली २), नमूना ।=)

पीड़ा आयल—यह तैल पीड़ाओं के वास्ते मालिश करने से अत्यन्त गुण करता है, खाने की औषधि के साथ इसकी मालिश करना, घुटना शूल, पिण्डुली शूल, कटि शूल, और सम्पूर्ण जोड़ों की पीड़ाओं को गुण करता है, मूल्य प्रति शीशी २ औन्स २), नमूना ४ ड्राम ॥)

अमृत गोली (रजिस्टर्ड)—कफज कास, श्वास, पेटदर्द, शीतज्वर, नेत्रपीड़ा, नेत्ररोग, नाखूना, सब प्रकार का विष, हड्डी का ज्वर, वात, सन्निपात, दन्तरोग, कोष्ठबद्धता, वन्ध्यापन, सर्प-

दंश, बिच्छूदंश, छलका, उदरकृमि, मूत्रबद्ध, आमाशय की निर्बलता,संग्रहणी, मुत्रकृच्छ्र, सन्धिवात, उपदंश, शुक्रमेह, मधुमेह, मुखगन्ध, दर्दशिर, कामला, जलोदर, धातुक्षीणता, मृगी, श्वेतकुष्ट नासूर, गञ्जशिर, अतिसार, मरोड़, कर्णपीड़ा, दन्तपीड़ा, अन्धराता, आर्तवबद्ध, भिड़ादि का दंश, शरीर की शिथिलता, गुदभ्रंश, शीत दोष, नाभि पीड़ा, तमक श्वास, अश्मरी, छीब, प्रतिश्याय, मूत्रातिसार, बालकों का डब्बा रोग, तृषा की अधिकता, इत्यादि रोग दूर होते हैं। और पांच सात गोलियां इकट्ठी देने से बढिया रेचन भी है। मूल्य ६० गोली १) रुपया, नमूना ≈)

ज्योतिष्मती मिश्रित—इसके ४० दिन सेवन से सतत शिरःशूल दूर होता है, दो मास खाने से स्मरण शक्ति बढ़ती है, पाठ याद होता है, कफ, प्रतिश्याय मिटता है, ३ मास खाने से पुरुषार्थ बढ़ता है, बलि पलित नष्ट होता है, एक वर्ष के सेवन से फिर से कृष्णबाल उगने आरम्भ होते हैं, मूल्य ७ तोला २),

शफा वटी—यह गोलियां शिरः शूल नए पुराने को गुणकारी हैं, और कफज कास श्वास नाशक हैं, जीर्ण ज्वरों में भी गुणकारी हैं, मूल्य ३२ गोली १), नमूना ८ गोली ।)

तारा तैल—यह तैल सतत शिरः शूल और विशेष कर अर्द्धाव भेदक या उन शूलों के वास्ते, जिनको उल्लू की पीड़ायें कहते हैं, जो शिर व नेत्रों दोनों में होती हैं, अक्सीर है, इस तैल में शक्कर व आटा मिला कर, हलुवा बना कर खाया जाता है, सात दिन के भीतर पीड़ा दूर होती है और, फिर नहीं होती है, यदि फिर हो, तो एक सप्ताह फिर खानी चाहिये, मूल्य ३ औन्स (मात्रा १ सप्ताह) २)

मोटा होने की औषधि—कतिपय लोग कोई विशेष रोग न होने पर भी और अच्छा आहार खाने पर भी मोटे नहीं होते, वह इसको सेवन किया करें। मूल्य आध सेर ४), नमूना आध पाव १) रुपया ॥

ऐंटी मेद (रजिस्टर्ड)—अति मोटा होना एक कष्टदायक रोग है। कुरूपता के अतिरिक्त यह मनुष्य को ऐसा निर्बल कर देती है, कि रोग इस पर तुरन्त आक्रमण करते हैं। मोटा मनुष्य

आयु भी अल्प पाता है। उसके सम्पूर्ण टिशूज़ चरबी से भरे होते हैं। वह जीते ही मुरदे के समान होता है। इस औषधि के सेवन से १ सप्ताह के भीतर ही लाभ आरम्भ होता है। प्रति मास ४-५ सेर और कभी १० सेर तक भार कम होजाता है। मूल्य फी शीशी खूराक १ मास ४), खूराक १५ दिन २) खूराक ३ मास १०)

वातकुलान्तक रस—यह गोलियां मृगी के वास्ते रामबाण हैं। प्रायः १ मास के भीतर आराम हो जाता है। इन गोलियों के साथ २ नाक में डालने के वास्ते अमृतधारा रखनी चाहिये। मूल्य ३० गोली ५), १२ गोली २), बालकों को ½ अद्ध गोली तक देनी चाहिये॥

पञ्चामृत रस—इसके खाने से घ्राण रोग यथा जुकाम, नजला, फुन्सी, नासार्श, कर्णरोग, यथा दर्द, स्राव आदि दूर होते हैं, सन्निपात को भी हितकर है। मूल्य ३० गोली १), नमूना ≈)

हकीम॥

दुनिया में अनुपम मैडीसन बक्स (औषधियों का डब्बा)

अनुपम इस वास्ते कि केवल ३ औषधियां हैं। जेब में रक्खा जा सकता है। और केवल ३ औषधियों से सर्व रोग दूर होने का ठेका मिलता है, इस वास्ते इस का नाम हकीम रक्खा गया है। अमृतधारा एक अनुपम औषधि है, इसके साथ इसमें एक शीशी गन्धाररस और एक शीशी अमृत की गोलियां हैं। प्रशंसा इनकी पीछे लिखी गई है। अमृतधारा ही पर्य्याप्त है। फिर जहां आवश्यकता पड़े इन को साथ मिला देने, या पृथक् सेवन करने से आराम ही तो होगा। मूल्य तीनों का ४॥) है, परन्तु इसको सर्व साधारण में प्रचलित करने के वास्ते केवल ४) रुपये रक्खा है, बक्स मानों मुफ्त है॥

औषधियां मिलने का पताः—

मैनेजर अमृतधारा,

अमृतधारा भवन, रेलवे रोड लाहौर।

अमृत प्रेस, अमृतधारा भवन लाहौर में छपा।

अतिरिक्त प्रत्येक ऋतु में होने वाले, फल भाजियों के गुण वर्णन किए हैं ॥ मूल्य १।)

शिशु पालन—बालकों का पालन, ईश्वर की कृपा हो तो प्रत्येक को करना होता है, परन्तु शोक है कि पबलिक इस आवश्यक विषय की ओर कम ध्यान करती है, इसी वास्ते जाति निर्बल हो रही है, और सब लोग, बाल्यकाल में बहुत कष्ट उठाते हैं, इस पुस्तक के भीतर पालना सम्बन्धी ऐसा कोई तत्व नहीं है, जिसका स्पष्ट वर्णन न किया हो, प्रत्येक घर में इस पुस्तक का वर्तमान होना आवश्यक है, प्रत्येक बात में आप के पथ दर्शक होगी, बालक के उत्पन्न होने, नाल काटने, और स्नान से आरम्भ करके ५ वर्ष की आयु तक क्या २ आवश्यक है सब आप को मालूम होगा, मूल्य प्रति जिल्द १) उर्दू ।||=)

कोष्टबद्धता—कोष्टवद्धता रोगों की माता है, और कोष्टवद्धता ही आजकल बढ़ रही है, और इसके इलाज में आजकल ऐसी भूल होती है, कि त्राहिमान ! सतत कोष्टवद्धता को दूर करने के वास्ते, प्राय: वैद्य लोग भी रेचक औषधियां दे दिया करते हैं, इस पुस्तक के भीतर आमाशय व अन्त्रियों की व्याख्या, कोष्टवद्वता के कारण, उसके प्रभेद, और उसकी चिकित्सा, ऐसी विधि से लिखी है कि सर्व साधारण वैद्य व हकीम साहिबान, एक जैसा लाभ उठा सकते हैं, मूल्य साढे बारह आना ॥।)॥, उर्दू ॥=)

शीघ्रपतन—समस्त दुनियां में ९९ प्रति सैंकडा से भी अधिक इस रोग में ग्रस्त हैं, कारण यह है कि बुरे व्यसन सम्पूर्ण जगत् पर अधिकार किए हुए हैं, इस पुस्तक में उनकी पूर्ण व्याख्या की गई है, और पश्चात् सविस्तर चिकित्सा और सर्व प्रकार के प्रयोग भी दिए गए हैं, ताकि प्रत्येक धनी व निर्धन लाभ उठा सकें, मूल्य ॥), उर्दू ।=)॥

मिलने का पता:- **देशोपकारक पुस्तकालय, अमृतधारा भवन लाहौर।**